-: प्रशात :--धी. थ. भा. दये. स्था. जैन कॉम्फरेस्स की सम्मति से बदरीनारायण जुक्ल

मंत्री, पुस्तक प्रकाशन विभाग, श्री तिलेक रन स्था, जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड. पार्ची (अंगर)

> र्मात ६००० मृष्य १ रु. ४ आने धारमधन् ६४८६ विक्रमसंदत् २८१६

> > - मुद्रक -

पृ १ से १३२ तक पंजमतीलाल नलवाया जैनोदस प्रिटिंग प्रेम, रनलाम कब्हरपेज,प्र. और पृ.१३३ संदर्गेनारायण शुक्ल

मुधमा मुझणालय,

पा ध र्डा

### प्राक्कथन

हमें बड़ी प्रसन्नता है कि धार्मिकशिक्षण के छिये कोन्परेम्स की ओर से तैयार की गई जैन पाठावली के लॉवर्ने भाग की यह

प्रथमायृत्ति श्रीतिलोके रान स्था जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड पाचर्डी हारा प्रकाशित की जा रही है। पाठय पुस्तक के रूप में जैन समाज में पाठावली का जो मृत्यांकन किया है वह हमारे लिये हर्ष का विषय है । बालकों को जैन संस्कृति और जैन तस्वज्ञान का सरखता से बोधकराने के लिये ऐसे सर्वमान्य पाठप्रक्रम की माँग कोन्परेन्स से होनी रहती थी। फळस्चरूप यह पाठावली श्रीधार्मिक शिक्षण समिति हारा श्री संतवाल जी से नैयार कराई गई है। जैनदाला, छात्रालय भेर स्कलो में क्रमदाः शिक्षण दिया जा मके और उत्तरोत्तर वालक धार्मिक ज्ञान प्राप्त कर संकेदस तरह इस पाठावली के ७ साम किये गये हैं। हम आशा करने हैं कि जहाँ २ अभी तक इस पाठावली को अपने पाटपक्रम में स्थान नहीं दिया गया है यहाँ २ सभी स्कूल, पाटशाला और सामालय यथा शास्त इसे अपना लेंगे और बालकों के कोमल हृदय पर जैन संस्कृति की गहरी छाप डालने में सहायक बनेंगे। आनंदरांभ सुराणा धीरजलाल के. तर्राविधा

> रामनारायण जैन मानद् संत्री श्री. म. मा. देवे. स्था, जैन कॉन्फरेस

शांतिलाल व. सेठ

खीमचंद मगनलाल बोरा,

कुम के पीछे यह विचार धेली मुख्य कप से राजी गई है। मंसार में नाम से होने घाले अनिष्ट और उन्हें दूर करने के उपायों का शान किस प्रकार प्राप्त करना? यह मध्यतया आयापको की योग्यत पर अवलिंग्वत है इन पाठयक्षम की पुस्तकों म से इस प्रकार की बान-दोहन करके अध्यापक विद्याधियों के दिल-दिमाग में भरेंगे पेसी अपेक्षा की जाती है।

पाट में माने वाले पद्य और काव्यविभाग के काव्यों का भर्य और भाव भाषापकों को अरुटी तरह समझाना चाहिये।

-- संतवाल

धीरजलाल के, तुर्राखया

मंत्री, धार्मिक शिक्षण समिति जैन ग्रह्तुल, स्यायर

### \* विघयानुक्रमणिका

दुवासमग-माहप्प
समणीवासया
समणे भगवं महावीरे अज्जे मिरिरोहै म
लोग-तत्त-सुन
असंखय जीविय
समय गोयम । मा पमाथए
कामभोगा
बगरण ,

Ę

۷

९ अध्या

۲۰

११ कुणिय-जुद

१३ मुदमणे सेट्ठी

26

وبر

१६

१८ पमाय-मुन

१९ नमाय-मुत्त

२० अध्यमाय-मुस

71

मेत्कुमारस्म निक्समण

बज्जुगए माठागारे

ममस्यितुत्ते गोमाले

च उच्चिहा समाही

१० योगालम्स मण्य

महावीरम्स गुणकिसण

द्वे-कम्मे

U

ر ۲۰

88

22

१४

to

₹0

28

20

3 8

2.8

36

٧o

٧÷

¥¥

4:			
21	! सामण्य		YJ
5,8			٧,
24	मियापुत्त-अम्मापियरो		41
२६	गोयम-महाबीरे		44
२७	गद्दभाली-सजार र		49
२८	संबोहणा		98
28	जीवणोदाय-परिवसा		ŧ٤
70	पाइय-भासा		96
3.5	' आगओ-दूओ '		61
35	अमय-दाण		٤٤
11	बहू-चनुरत्तर्ण		۲۵
\$8	ध रजण-व रजा		17
24	मिसवज्ञा	•	4
\$4	साहसवज्ञा	•	1
\$0	दीणवञ्जा	•	
16	रीवयवज्जा	•	
45	सीहबज्जा	•	6
Ye	नीइवज्ञा	*	6
8.6	<b>धीरव</b> म्ला	4	٠.
¥ξ	<b>बारम</b> नूत्र	51	4
**	गानसूत्र	800	
8.4	रगंनग्रं च	₹ a :	
86	चारित्रमूच	₹+≒	
Y.	तपमूत्र	१०२	
	मुमापित	₹•३	
,	वर्षनो की परस्पर मुलना स्याजाब	१०५	,
'		₹•८	
		\$58	

(३) निवयापा

ह तेवह क्रम विभागित क्षिण विशेष इस रहारी व नीम र साथ में उस में साथ अन्य क्ष्मा क्षम समें वेदा के स्थित 11 जैन पाठावलीं भ

### [ सातवां साग् ] <u>फालका</u>ण्य

जुला दुवालसंग-माह्य्ये

् इच्चेरपीम दूबासासी गायिषिको मणेवा भावा भावा धमाबा, मिर्माता हैक, भावा महेक, धमाबा फिरसो धमाबा, मेम्बा, मणेवा स्वीवा ध्येनी स्वीवा भावा भावा भावा स्वावा स्वावा स्वावा स्वावा स्वावा महीसिद्धा, वर्णवा समासिद्धा, स्ववा सिद्धा स्वीवा भाविहा परेपायाः

मार्यम्भावा देउनदेज कार्यमकार्य वर्ता । जीवाञ्चीर्वा मविष्यमंत्रिया सिद्धा मतिद्धा य ॥

- इच्चेर्स दूबालमंगं ग्रामितिहर्गं, श्रीए काल कर्णता वीना काचाव कारादिका चाहरंते मंत्रास्वंहारं बाह्यसंत्रे । पुरुषण्यकाले परिचा बाहर्गुर्वे, च्यानुष् (२) दौन पाठावली

इच्चेह्यं दूबालसंगं गणिपिडनं न कवाइ नासी, न कवाई न मबद, न कवाइ न भविस्तर, मर्वि च मबद प, मबिस्तर, य, पुबे, निषए, सासए, अक्सए, अव्वर, बबहिए, निच्चे !

## समगोवासया

तेणं कालेखं, तेणं समएणं, तु तिया नामं नयरी होत्या शीमेखं तु नियाण नयरीए बहुयं, समलोबामया परिवसंति कहूं।, दिचा विरियएण-विद्युल-मयण्य-मयणामण-आणं-बाहणार्एणा बहुयाबहुजायस्वरपर्या, आसीते वसी संपंत्रणा विरुद्धियविश्वसम्वराणा, बहु-मदी वसी संपंत्रणा विरुद्धियविश्वसम्वराणा, बहु-मदी सामित्रणा, बाले सामित्रणा, विरुद्धियविश्वसम्वराणा, बाहिस्म-गरेनवा-व्यव्या, सहस्य च्यारिस्म सामित्रणा, बाले प्रविद्यानीया उपनद्वानाया ब्याप्य-नेवर-निक्ष

किरिया-बाहरस्य-वेष-मोहस्यहगसा, बहेल देवाटगुर-न्या सुरवस्य बदश-वहरण-हित्रपर-हित्रुपित-पारल-पीवरद-बहारसाहरपिद देवगयेदि निर्मवासी बावयनासी सामितः बाह्यस्या शिरमपि पाषयमे निर्माहिया, निरुटीयया

संबन्धा निर्माव वादवने निर्माहिया, निरुतीयवा निर्मातिकता, सदद्वा गहियहा वृध्वियहा सनिमवहा विविक्तिकाहा स्मृहिनिर्मेतासुगगरमा स्वमानसी. निर्मणे पायपणे अहें अर्थ परमहे, सेसे अणहे असिय फलिहा अर्थमुण्यूनार चिवलंते उत्परप्यक्षेता पहुँ हिं सील- अपन्य अमुद्राव प्रवाद निर्माद विवलंते उत्परप्यक्षेता पहुँ हिं सील- अपन्य अमुद्राव प्रवाद करा कि सार क्षा का का कि सार कि

र्वे अस्ति है। के **ब्रह्मक**्रिक

विद्रंति !

# ामणा मगवं महावीरे अज्ञे सिरिरोहे प

तेर्पं कालेणं तेर्थं समर्थनं संगयंत्रमं भंगवत्रमें बहानीरस्त्र भन्तेवाती रिदे चार्मं भवतारे लगानरहं, राह्मवंद्रंप्ता-हिर्देशि, रुगाडनबंदि, राह्मवंद्यु-मोह-माल-माल-सोन्धे-निकादवर्षयने मलीचे महर, विचीर सम्बन्धः मानको महावीरस्य महरसार्थने यह बाह्य महोस्ति साम्बन्धेन्द्रे

बगए, संबमेपं वरसा मणाणं मारेमारो दिहरह । 🖍

तत्य पंचतिईं नाणं, सुपं धामिनिरोहिंगं। भोहिनाएं तु तह्यं मणनाणं च केवलं।। नायस्यावरियज्ञं दंगणावरणं वैयणिज्ञं तहा मोहं श्राउक्तमं तहेव य ।। नामकरमं च गोत्तं च द्यंतरायं तहेव य । एवमेयाई कम्माई झट्टेव उ समासधी। सो उनो दुनिहो बुची बाहिरवर्मतरी तहा ! पाहिरी छन्विही बची एवमव्मंतरी तवी !! श्रणसणमृणोपरिया, भिद्रखायरिया रसपरिशास्रो। कापिकलेसी संलोयणा य वज्मी वनी होहै।। पायच्छितं विराधी, वेपावच्चं तहेव सम्माधी । भागं च विउस्सम्मो, एसो ब्राव्मितरी तवी ॥ किण्हा भीलाय काऊ य, तेऊ पम्हा तहेन य । सुक्कलेसा य छहा नामाइं ,तु जहक्कमं।। किएडा नीला काऊ विभि वि एयाओ अइम्मलेसाओ। एयाहि : तिहि : वि : जीवो दुरगई ' उपवजनह ॥ हेऊ पम्हा सुके। विभि वि एयाथी धम्मलेसाथी। एयाहि विहि वि सीवो सुगाई उववज्जह ॥ थड-पर्वण-मायांथी समिई गुनी तहेव य। पेचेव य समिर्द्यो तथी ग्रचीयो प्राहिया॥

दिराया भारोसखादाखे उच्चारे समिई इव।
मखानुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती य महुमा॥
एयाओ पंच समिईओ चरणस्त य पवचये।
गुत्ती नियचये चुत्ता असुमत्येष्ठ सन्यसे॥
एसा पवपखमाया जे समं आयरे सुखी।
से खिप्पं सन्यसंसारा, विष्मप्रचुद्द पंडिए॥

## प्रसा**त्रमंखयं जीवियं**

धसंखयं जीवियं मा पनायए, अरोबणीयस्स हु नित्य नाणं।
एवं विज्ञाणाहि जये पनचे कं सु विहिता अज्ञया गहिति ।
विचेश ताणं न सने पनचे कंसि तीए अद्भा पत्य ।
दीवपण्यहे च अन्य नामे हे नेपाउमं दहुमदहुनेव ।।
तेश जहा संचिष्ठहे नाहीए सक्त्मुखा किच्चर पावकारी।
एवं पया पेच्च हर्ष च लीए कडाय कम्माण्य नित्य अविवा ।।
संसारमावस्य परस्स अहा सहाराणं जं च करेह कम्मं।
कम्मस्स ते तस्स ज वेयकाले न पंचना पंचनमं उनिते ॥
सुनेसु मा विच्यद्वीची न बीसने पंदिए आनुपचे।
धोरा सुदुचा अवलं स्रीरं मार्ट्यक्रसी व चरेठमुष्टे

काममोगा सन्तं कामा विसं कामा, कामा व्यासीविसोयमा । कामं य पत्थेमाणा अकामा जीत दुम्गई ॥१॥ सब्बं विलवियं गीयं सब्बं नहं विडंबियं ।

सब्बे आगरणा भारा, सब्बे कामा दुहावहा ॥२॥ खणमेचसोक्या बहुकालदुक्खा, पगामद्वया अधिगामसोवला ।

संसार मोक्खस्स विपक्खभूया, खाणी अणुत्याण उ काममोगा ॥३॥

जहा किंपागफलाणं परिखामो न सुन्दरो । एवं भ्रताण भोगाणं परिणामो न सुन्दरी ।।।।।

जहा कियाग फला मणीरमा रसेण वण्णेण य मुंजमाणा। ते सुहुव जीवियं पचमाणा ऐसीवमा कामगुणा विवागं ॥५॥ उबलेवो होह भोगेषु अमोगी नीवलिपई

मागा भगर तथा जडी संघाडि मुहिलं । चीराजीणं मिर्गिषणं जडी संघाडि मुहिलं । एयाणि वि न तार्यति दुस्सीलं वरियागयं ।७॥

७५७ । १९५ संसारे अभोगी विष्यमुद्ध ॥६॥

प्पाणि वि न तांगीत दुरताल प्पाणि वि न तांगीत दुरताल स्वे य सब्दो । ते केह सरीरे सत्ता वण्णे स्वे य सब्दो ॥ ते केह सरीरे सत्ता वण्णे दुवस्तमया ॥॥ ं वयकेणं 🥕 🗸

समा इद काममुज्यिया मोह जंति नरा असंगुडा ॥११॥
संगुज्यह ! किं न पुज्यह ! संवीही खलु वेच दूझहा |
नी हवव्यवित राइयो नी सुलमं पुष्पापि नीविय ॥१२॥
दुष्परिवया इमे कामा नी सुजहा अधीर-पुरिसेहिं ।
अह संति सुल्यया साह जे तरित अतर विव्यया या ॥१२॥

अस संति सुल्यया साह जे तरित अतर विव्यया या ॥१२॥

अस सर्ग क्षा न नाइमो तं वाले सर्ग ति मधह ।
पूर मन तेस वि अहं नी तार्ग सर्ग निवज्जा॥।।

जम्मं दुम्खं जरा दुम्खं, रोगाणि मरणाणि य ।
सदी दुम्खो हु संसारी तत्य कीसंति जंतुणो ॥२॥
इमं सरीरं अणिचं, अक्षदं असुइसंमनं ।
असासया वासविणं दुम्ख-केसाय मावणं ॥३॥
दाराणि सुपा चेव मिचां य तह पंचरा ॥
जीवेतमणुत्रीवंति मर्यं नाणुत्रपंति य ॥१॥
वेवा अदीया न मर्वति ताणं सुचा दिया नीति तमें तमेणं।

प्रपुत्रं जीवियं नचा सिद्धिमर्गः विवाशिया । वेश्विद्यदण्डन भोगेसु ष्ट्राउं परिमिष्यमप्पयो ॥१०॥ परिसो रम पावकमूखा पलियंतं मध्यपाय जीवियं । ਕੈਜ ਧਾਤਾਕਰੀ

( 80 )

कार्म सब्दं विलिवियं गीयं सर्व्यं नहं विडंबियं ।

सब्बे ब्यामरणा मारा, सब्बे कामा दूहावहा ॥२॥ खण्मेत्रसोक्खा गहुकालदुक्खा, पगामदुक्या व्यख्णिमसोक्खा ।

संसार मोक्सस्स विषक्खभूया,

लहा किंपागफलाणं परियामी न सुन्दरी । एवं भूचाण भीगाणं परिणामी न सुन्दरी ॥४॥ जडा कियाग फला मणीरमा रसेण वण्णेण य मंत्रमाणा । ते स्दइव जीवियं पचमाणा ऐसीवमा कामगुणा विवागं ॥४॥ उबलेबो होह मोगेनु अमीगी नीवलिप्यह । भोगी मनइ संनारे अमीगी विष्यमुख्द ॥६॥ चीराजींगं निर्माणणं जडी संघाडि मंडिणं । एयारि वि न तापंति दुस्मीलं परियागर्य । ७॥ जे देई सरीरे सत्ता वण्णे रूपे य सन्तरो। मलमा काप यरकेणं मध्ये व दुक्ससंमया ॥=॥ भज्येर काली त्रित राह्यो, न यानि मोगा प्रस्तास निधा । द्विष मोगा प्रसि चर्यति दुर्म जहा खीवफलं व पक्यी ॥ह॥

कामा विसं कामा, कामा आसीविसीवमा ! य पत्थेमाणा अकामा जैति दुग्गई ॥१॥

काममोगा

खाणी व्यालयाण उ काममीगा ॥३॥

सचा इद कामग्रुष्टिश मोहं जंति नरा व्यसंतुडा ॥११॥ संतुरुक्तह ! किं न युरुक्तह ! संगोही खलु पेच दुल्लहा । नो हुवलमंति राहको नो सुलमं पुलारादि लीविय ॥१२॥ दप्परिचपा इमे कामा नो सलहा व्यपीर-परिसेटिं ।

श्रह संति सुन्त्रया साह जे तरंति श्रवरं विखया वा ॥१३॥

ध्रपुर्व जीवियं नचा सिद्धिमर्गा विवासिया । विशिष्ठ्रमण्डन भीगेसु श्राउँ परिमिथमप्यको ॥१०॥ प्रसितो रम् पावकम्प्रसा पलियंतं मसुपास जीवियं ।

### . श्रसररां वित्तं पसवो न नाइको तं बाले सरणं ति मद्यइ ।

एए मन तेसु वि अर्द नो ताणे सरये न विज्ञह ॥१॥ जम्मं दुसर्वे जरा दुसर्वं, रोमाणि मरणाणि य । अदी दुसर्वो हु संसारो वरय कीसंति जीत्वो ॥२॥ इमं सरीरं अणिर्वं असर्वं असरसंसर्वं ।

ब्बही हुनखी हु संसारी बरय कीसीते जीतुणी ॥२॥ हमं सरीरं अध्यक्ष, ब्यह्मं ब्यह्मसंगवं । असासया वासविणं हुन्छ-केसाण मायणं ॥३॥ दाराणि सुपा चेव मिना य तह गंपदा ॥ होवंतमणुकीर्वेति य ॥४॥ विश्वपंति य ॥४॥ विश्वपंति य ॥४॥ विश्वपंति प ॥४॥ विश्वपंति प्रमुष्ठी विश्वपंति प्रमुष्ठी विश्वपंति प्रमुष्ठी विश्वपंति प्रमुष्ठी विश्वपंति विश्वप

(१२) जैन पाठावली गाया य पुता न हवंति वाणं को नाम वे कातुमन्ने उन्ह एयं रे ॥४॥ नाम नामां च कारणारं च सेनं किर्दे प्राणकां च सर्वर ।

चेपा दुपरं च चउपपरं च खेर्त मिहं घणचरं न सर्व । हम्मण्योमो अवसी पयाइ परं भवं नुंदरं पावगं या ॥६॥ बहेह सीहो य मियं महाय मन् नतं नेह हु खंतकाले ।

रहेह सीहो य मिर्थ गहाय मच् नरं नेंद्र हु खेतकाले ! रतहस माया व विचाय माया कालींम व≠मंसहरा मचेति ॥७! त्रीमखं जगई पुढ़ो जमा कामीहॅ लुप्पेति पाखिखों ! उपसेच कडेहिं गाहह नो तस्स सुबैश्जऽपुट्ट्यं ॥=॥

यसासप् सरीरंमि रहं नीचलमानहं।
१०द्वा पुरा व चह्यव्ये फेल्युस्नयमन्त्रिमे ॥६॥
मालुमचे ध्रधारंमि चाहिरोगाय ध्रालए ! जरामरणपत्यंमि स्वणं वि न रमामहं ॥ १० ॥ श्रीवियं चेय रूपं च विश्वसंपावचंत्रसं । जस्य में सुरुक्षति राय्ये ! चेचत्यं नावजुरुक्षति ॥११॥

न्नातिय पर रूप च विश्वतिषायपचल । ज्ञारम् से सम्मित सार्थ । पेरात्यं नावपुण्यति ॥११॥ नृतस्य दुस्यं विमर्यात नाइयो न निषचगान नगुरा न यंवना। इस्ते तर्य पगलुरादं दुस्यं क्यारमेर झलुबार कर्म ॥१२॥

त्राप्ता १ व्यापा नर्षे येवस्त्री, काला ने कृडमामली । १ व्याला कामद्वर पेला, काला ने नंदर्ग वर्ण ॥१॥ थप्पा कत्ता विकत्ता य, दृहाख य सुद्दाख य। थणा भित्तममितं च. दुष्पद्विय सुष्पद्विश्री ॥२॥ थ्यपा चेत्र दमेयन्त्रो, अप्पाहु खलु दृद्मो। थ्यपा दंती सही होड़. श्रस्ति लीए परत्य य ॥३॥ वरं मे श्रप्पा दंती, संजमेख तवेश य । माऽहं परेहिं दम्मंती यंधगेहिं वहेहि य । ।।।। जो सहस्सं सहस्याणं संगामे दज्जए जियो । एगं जियोज्ज श्रापाणं एस से परमो लश्री। ५॥ श्रपाणमेव जुल्काहि, किंते जुल्केण वरक्त्यो । पंचिदियाणि कोहं माणं मायं तहेव लोहं च ।

व्यप्पाणमेव ध्रप्पाणं वहचा सहमेहए ॥६॥ द्रज्जयं चेव श्राप्ताग्यं सव्यमप्ये जिए जियं ॥७॥ न तं अरी कंडच्छेचा करेइ, जं से करे अप्यशिया दुरपा।

से नाहिइ मसुमुहं तु पत्ते पच्छाणुतावेश दयाविहुशो ॥=॥ षस्तेवमप्पा उ इवेज्ञा निच्छित्रो चड्जा देई नहु धम्मसासर्ण। र्च तारिसं नो पपलेंति इंदिया उवेति वाया व सुद्रंसणं गिरि ।।६।। ंभ्रप्पा हु खुल संययं रक्खियब्बी सब्बिदिएहि सुसमाहिएहि । अरिक्षमी जाइपह उच्चेह सुरिक्षमी सम्बद्धाण मुच्ह । १०॥

सरीरमाहः नावति क्षीयो युव्चः नाविम्रो ।

संसारी अएणको बचो खं वरंति महेसियो ॥१

## मेहकुमारस्स निक्खमगां

तए णं तस्म मेहस्स खुमारस्स ब्रम्मापियो मेहङ्गारं पुरमो कहु जेखामेव समये मगवं महावीरे तेखामेव खगर-गच्छन्ति, खगागच्छिता समणे भगवं महावीरं तिकसुणी खायाहिणं पयाहिणे करेति, करित्ता चंदंति नमंसंति वंदिचा नमंसिता एवं वयासी---

"एस यं देवाणुष्पिया । मेहे कुमारे ध्वन्हं एते पुणे इहे, कंचे, जीविपउस्सासए हिपययंदिजयए उंपर पुष्फ भिव दुव्वहें सवयपाए किमेग पुण दरिसयपाए। से जहां नामए उपलेति या पउमेति या नीयलिप्पर जलरएगं, एवामेय भेहे कुमारे कामेग्र जाए, भोगेग्र संबुद्धे नीयलिप्पति कामर-

एणं नोवलिपवि भोगरएएं ।"

"एस खं देवाखुष्यिम संसारमडिवरंगे भीए जन्म-श्वजस्मरयार्थं, इच्छर देवाखुष्यायार्थं अंतिए मुंडे भविना जमाराभी अप्रकारियं व्यवस्थ । अन्हे खं देवाखुष्यम सारसभिषयं देवयांभे पडिच्छसु खं देवाखुष्या सिरसभिषयं "

वए णं से समयो मगर्व महावीरे मेहस्स कुमारस्स ध्यमापिउहिं एवं युचे समायो एयमट्टं सम्मं पडिसुचीति ! सावयां भाग ( १५)

तए वं से मेहे कुमारे समग्रस्स भगवन्नी महावीरस्स श्रन्तियात्रो उत्तरपुरत्थिमं दिसिमानं श्रवक्कमति श्रवकः-मिचा सयमेव श्राभरणमञ्जालंकारं श्रोप्रयति ।

तए णं से मेहकुमारस्स माया इंसलक्ष्याणेणं पडसाड-एएं आमरणभद्धालंकारं पहिच्छति पहिच्छिता हारवारि-घार सिदंबार-छिनमुत्तावलिसगासाई श्रंस्णि विणिम्मु-यमाणी विणिम्मुयमाणी रोयमाणी रोयमाणी कंदमाणी फंदमाखी. विलवमाखी विलवमाखी एवं वयासी--जतियन्त्रं जाया ! घहिपन्त्रं जाया ! परक्रभियन्त्रं

जाया। अस्ति च णं अहें नी पनादेयव्यं। अम्हं वि णं एमेर मांगे भवड ति कट्ट मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो समणं मगर्व महावीरं बंदंति नमंसन्ति वन्दिचा नमंसिचा जामेत्र दिसि पाउच्यूया तामेत्र दिसि पडिगया । . तए णं से मेहे कमारे सबमेव पंचमुहियं लोयं करेति करित्ता जेगामेव समग्रे भगवां महावीरे तेगामेव उवा-गच्छिता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्ती व्यायाहिणं पया-

दिणं करेति करिता वन्दति नमंसति वन्दिता नमंसिता

एवं चयासी-थालिते में मेरी! लोए, पलिचे में भेरी! लोए, श्रालिच-पलिचे णं भंदे लोए जराए मर्खेण य । से जहा- खामए केई गाहावती झगारीस सिरांग्यमार्थास जे तत्व भंदे भवति आप्यमारे, मोझगुरुए तं गहाव झावाए एर्गवे झवकमेति "एस मे खिरवरिए समाखे पञ्छा दुरा हिवाए सुहाए खमाए खिस्सेसाए झाखुगामियचाए भविस्सर्वि, एयामेव मम वि एमे झावा मंडे १हे, कंचे. विवे मखुके,

प्याप्त मन वि प्रा आवा मह इह, कवा, १५० चडुन मणामे एसे में नित्वारिए समाणे संसारवोच्हेयगरे मनि स्सित । ते इच्छामि वे देशाणुरिववेहि सपमेत वच्याविये, सपमेत मुंजाविये सहाविये सिक्तावियं सपमेत आयार्न गोपइ-चिव्य-वेवाइय-चरण्-वरण्-वरण्-जापा-मापा वित्ये घममाइदिख्यं।"

तए ण समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं सबभेव पच्चविरं, सबभेव द्याचार-गोयर-गिल्य-वेलस्य-परण् करण-जाया-माया यत्तियं धम्ममाहबराह--

एनं देवाणुष्यिया । गंतनं, चिहितनां मिसीवनां, तुर्वाह्वपनं, मुनियनं, भामियनं । पनं उद्वाय उद्वाय पायिहिं भूतिहें जीतिहें, ममेहिं संजमेणं, संजमितनां। कार्मिय पर्वे कहें भी बमादेवनं।''

तए में से मेंदे इसारे ममजूरत मगदमी महावीरस्य संतिए हमें एयास्व, पिमापे उपएमं खितारंम सर्वेन पिदरम्बर नमालाए तह गन्दर, तह चिद्दर उद्घाए, उद्दाय पाणीर मृतिह स्रीदेरि समेरि संबन्ध। सातवाँ भाग<sup>ः</sup> ( १७ )

ा गार के में कुशियं जुद्धि कि गार के का गार कुश्चित वेड्यू सचा स्मीत कहार लड्डे समाची नव महार नेवू वेड्युह कामीकीलला अहारस वि गण-

नर्य मर्झर नेयु चिच्छर कासीकोसलगा अर्द्धारस वि गण् रायाओं संदीवित सदाविता एवं वर्षासीः— पर्य खुल देवाणुर्णिया ! बहेल्ले छुगरे कृषियस्स रुज्जो

धानिविदेते ये तेपवाच अद्वारस्वके च हार ग्रहाय् इंट्र इंट्रमागते । तप ज कृष्णियणं सेयवगस्य अद्वारस्य वेकस्य ये अद्वारे स्त्रा येष्ट्रायां सेयवगस्य अद्वारस्य वेकस्य सेहिया । तप जे के प्रियोग मा एवंगड्र अरहिस्स्यास्य माजरंगियोग सेवाप सिद्धांसंगरिखंड खुरुक्तरमने इद ह्व्य-मागस्य । तो कि ये देवाख्याया । सेयवगं अद्वारसर्वकं कृष्णियस्य स्त्रोः पर्याप्यकामे वेदझं कुमारं सेसेमे उदाह खुल्मस्याः ।

रस्तं वि पंखराधीची चेडगरायं पूर्व वयावी—

मार्गा वि युवा वा पर्य वा रायसिसं वा वं णे सेवया अहारस्तर्वके च क्षणियस्त रही पंचणियज्ञित केरिय कमारे सरकाराय रिसिजीत । र्रं वांणं क्षणिय

वहेंद्री य कुमारे सरणागते पेसिअति । वं बहणं कुणिए राया चाउरगिणीए सेणाए संदि संपरिवर्टे इह इच्यमागच्छति तए ण अम्हे कुणिएण रहा सर्दि जन्मामो ।

तए ण से चेडए राया ते नव मल्लइ नवलेच्छई कासी कोसलगा अट्टारस्स वि गणरायाणो एपं वयासी—

कोसलमा ब्राइंग्स्स व मणरायाणो एव वयासा — "जाः णं देवाणुष्यिया ! तुन्ने कुणिएणं रह्मा सर्वि जनमह नं गच्छह णं देवाणुष्यिया ! सएसु सएसु सर्वे

तिहि देतिमहस्तिहि, निहि बाससहस्तिहि तिहि रहसहस्तिहि मसुस्सक्तीडिहि सदि छंपरिगुडा प, सएहितो नगरेहिती पडिनिज्ञखिमचा मम ब्येतिए पाउन्मवह ।"

तए णं से घेडए सामा सचावमाए दंगिसहस्सेहिं सचावमाए व्याग-महस्मेहिं सतापमाए रहनदस्सेहिं रातां बन्नाए मणुस्मकोहीहिं सर्दि संपिश्वे सविवद्गीए "" व्यन्तरिहं व्याप्ये मन्म मन्द्रेगं निगच्यति ज्येष देगसंगे सेखे

उनागच्छित उनागच्छमा संयाधारित्रेसणं करेति करिया कृषिपं रायं पहिनासमाये खुरुक्तरणे चिद्वति । तत्त् यं से कृतित् साथा मध्यद्वीत क्षेत्रेये देतव्यंत्रे वेचन उनागच्छा उनागच्छमा चेडमस्य रन्त्री जीवर्ग-

वृत्यं चंत्रायस्तित्यं करेति ।

जाव'मेंगुस्सकोडिहि गरूलवृहं रपंति रहता गरूलवृहेण रहपूसले संगाम उवायाते।

रद्दभूषल संगाम उवायात । भारतिक में से चेड्रप् राया सतावन्ताए मणुस्तकोडीहिं सगड़बूंहें रपति संगडबृहेण रहमूसलं संगाम उवायाते ।

त्रावृद्ध र राज्यां व्यवस्य अपूर्व क्षांचा संन्यद्धा सिंद्या-चंद्रपदरचा परास्पर्द फलपर्दि निकडादि असीदि अंदागप्दि सुविदि सबीवेदि य भय्दि समुस्विवेदि सर्दि समुल्त स्वितिहि सबीवेदि य भय्दि समुस्विवेदि सर्दि समुल्ता स्वितिहि बाहादि 'खिपसूरेण' यत्रत्रमायेग्यं महया उक्तिह्न-

चिंताहि वाहाहि छिप्पत्रेण चन्नमायेण महता चिन्ह-सीर्हनापरील-कलंकन रेगे, संहुद्रश्यूपं वित्र वरेनाया हेर्याया हेर्यायीह पपपपप गंगगलेहि रहमपा रहेगलेहि पायचिया पायचिएहि अन्नमन्तिह सहि संपलागो पार्वि होत्या।

११८ तर्द में ते दोष्ट्र-पि ताईणं व्यथीया विषयासामी साराबांखुरमा महया जवांस्वरी सवावर्ष जवाष्ट्र जवाप्महर्य व्यवसंबद्दस्यं मध्येतकर्यप्यारमीमे कहिर्द्यस्य करेमाखा अन्त्रमसेव तिद्विज्ञनसेव ११८ मा स्वर्थमसेव

### ---इ.स. इ.स. **दुवे-कस्मे** के १४३

... हेर्न फालिनं दीर्न समप्तं बामारमी नाम नव्हरे हेर्द्या-दीते सं पामारमीप मधीप बहिया उत्तर पुरस्विमे निर्माणको संगाप महामहीण मधीपतीरहरे नाम हहे हैरिया-

होते च वाजात्सार नयसेच बहिता उत्तर होत्या-दिसीमार्ग संगाप महानदीए संगतीरहहे नाम दहे हात्या-इत्तुपुत्रमुक्तायरण-गंगीरसीयलञ्जे संख्यित प्रिनंद्यने संन्युप्तपुरकानासे वह उदराव-प्य

्ना चर्चे पडिस्वे प

्रः, तस्य खं बहुषं भद्धार्थं मन्ध्रद्वारा य गाहाय स्पन् द्वाय सुंतुमाराख्यं,य सहयाणं य साहित्याणं,य सप्त-साह-स्तियाणं य ,जुहाई ,निस्मयाई, निस्हियमाई, स्पृहं-सुहुणं स्पिरममाखगाई व्यविस्तुमाखगाई विहर्रतितः । अस्तिस्य

त्तस णं भर्यगतीरहहस्य अद्रर-तामन्ते द्रियणं महं स्पे मालुवाकच्छए होत्या । तित्य मं द्वे, पाविभावता। प्रतिसति पावा चंडां, रोहा, तिल्लच्या साहित्या/लोहित-साखी कामिसत्वी मामिसाहारा, आधिसप्यिया व्यक्तिस लोला आमिसं गरिसमाचा रिच वियाल-चारिको दिवा पच्छारं वादि विदृति । ःसातवाँ माग (२१.)

, तर् णं.तात्र्यो मर्पातीस्ट्राती बन्नपा क्याई धरियंति । विरह्मिपंति सुलियाण्.तंकाण् पृथित्वमाणुर्वेति विसेत-पिडिव्यानंतित सभाणीत् द्वे कुन्मपा, ब्याहारत्यी व्याहार् , पृचेतामाणु, सुवियं, क्ष्मिपं, वृत्तरित, तस्येव प्रपंगतीस्ट्रहस्स सुविद्याल्या सन्वर्ता सुमंत्रा परियोजेमाणा विश्वं कर्षमाणा ।

परिवर्तका तन्त्रची समेवा परिवालमाणा विधि कर्ण्याणा निवरिति । ११ - १९ - १९ - १९ - १९ विधानिका महारत्या घाडारी गरेक्याणा मालुग कञ्च्याची पडिनिक्यमंति पडिनिक्य-मिना नेचेव मर्गगरीर दहे तेचेव उचागन्त्रति उचागन्त्रता

वस्ति मेर्यगरीहरहस्त विभिन्नतेच विश्वविमाणा विभिन्नेस्या विश्वविक्तामाणा विष्वविक्तामाणा विष्

ंतर तर्य में ते कुम्मा वे पाविचालए प्रविचाणे प्रावेति । भाविचा भीता तत्या चित्रपा, विच्यामा संवातमपा, इत्ये । प्रायं प्रत्ये प्रतिचार व सप्रदे निकार्य के भावदि । साविचा निचला निक्तरात् सिंचीपा, संसिद्ध वि । ... । तर्य सं वे पाविचालया जैये वे कुम्मा वेषेत्र चेत्राम-दिस्ति त्यापिष्ठला वे कुम्मा । सम्बन्ध स्वता : क्यचिति

.परिवर्षेति, न्यासारेति संसारेति परलेति पहेति, क्रदेति,

(२२) क्षेत पाठावती

खोभेनित नहें हिं श्रालुपति दंते हैं य व्यक्तोडेन्ति नो चेव में
संचारित तेसि कुम्मणणं सरीरस्स श्रावाहं या वायाहं वा
उपाएचए श्रविच्छेगं या करिचए !

तए मं ते पावसियाल्या एए कुम्मण् दोचींपे तर्व पि
सच्यती समेता ठवचीति

संवाहं सहिचए। वाहे सेता तंता परिस्ता निवन्ना संभाषा
संवार्य सर्वार्य प्योसक्रहेंति एर्गतमुक्रहोंति, निचला

निष्दंदा तुप्तिश्रीया संचिद्दंति ।

तत्य णे एगे कुम्मगे ते पारसियालए 'चिरंतते दूरंगए
जाणिचा सथियं सथियं एगं पायं निच्छुपति ।

तए जं ते पारसियालया तेशं कुम्मएश्री सथियं
एगं पायं नीथियं पारति पारिस्ता ताएं जिन्हें हुए गरेए
सिग्गं चवलं, तुरिसं चंडे बेगितं, जेशेव से कुम्मएश्री त्यां
उपागच्छति उवागच्छिया तस्य में कुम्मगस्स" तं पार्य

सातवों मार्ग (२३)

शीखिये यासंवि। पासिका सिग्धं नवलं तुरियं चंडं नहेर्दि दंवेदि कंवालं विदार्जेत । विदारिका तं कुम्मगं नीवि-पान्नो वयरोवेंति वयरोतिचा मंसं च सोखियं च थाडारेंति । एवंभियं संस्काउसो । जो धम्हं निग्धंयो वा निग्धंयो वा झायरियउवज्ज्ञावाणं झंतिए पव्यतिए समाधे पंच य से दृदियाई अगुत्ताइं भवंति से खं इह समे चेव पहुणं सम-पाण्यं बहुणं समयीणं सावनाशं साविनाणं हीलायिक्षे पर-सोगे वि य णं आगच्छति वहणं दंडनाणं संसायनारं

वय ज ते पारसियालाग होने वि तब वि जान नो संबाधित तस्ते हम्मास्त दिनि सार्वाह वा बान नो संबाधित तस्ते हम्मास्त दिनि सार्वाह वा बान होने स्वाधित सार्वाह तस्ते त्या स्वाधित स्वाधित स्वाधित त्रीति विहाम होने हम्मास्त्र हिन्दि वाउनप्रेश तामव हिन्दि विहाम होने हम्मास्त्र हम्मास्त्र हिन्दि वाउनप्रेश तामव हिन्दि विहाम होने सार्वाह हम्मास्त्र हम्य हम्मास्त्र हम्सास्त्र हम्मास्त्र हम्मास्त्र

ीन पार्टावनी

( २४ )

करिता चार विशेषित भीवेषां ताय विशेषित भीवेषां ताय उपिकडाय कुम्मगईए बीद्ययमाणे चीद्यंयमाणे जेषेत्र सर्थानीरबुदहे वैशेष उद्यागन्छत् उद्यागन्छता मिन-नादिः निमम्माययस्य विशेष उद्यागन्छता विशेष व्याप्तिकत्वा विशेष व्याप्तिकत्वा विशेष व्याप्तिकत्वा विशेष वि

एवामेव समणाउसो ! जो अन्दं समणो या समरी वा पंच से देदियाई गुचाई मचेति से णं इह भवे अर्घाणि जहा उसे पुम्मए गुचिदिएँ।

# सुदंसणे सेडी

रायगिदे नगरे .सुदंसणे नामं सेडी परिवमदे, खडुं जाद अपरिभूष । तए णं से सुदंसणे समयोगससर यावि होत्या । अभिगय-जीवाजीवे (जाय) विदर्श । ते णं कालेणं

तेणं सम्यणं सम्यो भगवं महावीरे (बांव) समित्रहे विहरेह । तंष् यं राविरिहे नयरे (सिंगाडग) [•] बहुनयो अर्ण्यमेत्यास एवभाइनवर (जाव) क्रिमंग पुण विप्रवास अहस्स गहुवार्य [•] पर्व तस्स शुद्धसणस्स बहुनयस्स अतिर एवं सोबा

निसम्म अर्थ अन्मतियए:-- ('व्यं रालु समणे ('जाव')

सातवाँ भाग (-२1)

विदृद्धः । यं गम्ब्रामि णं [०] यंदामि" । एवं संवेदृद्धः संवेदिका लेखेन ध्वममाविषते विवेच क्वानम्बद्धः । उपागन्द्रिका करणलः [०] ध्वेनलि कह एवं वपाती "एवं खलु ध्वमम् ध्वमम् सार्व्य [नान] विदृद्धः । यं गम्ब्रामि णं सार्व्य नानी विदृद्धः । यं गम्ब्रामि णं सार्व्य नानी विदृद्धः । यं गम्ब्रामि णं सार्व्य नानी विदृद्धाः संवेचामि विवानी चन्नवामानि ।"

याया समय [माय] विदर्ध । त गच्छाम या समय माय महावीरं यंदामि नयंदामि [जात] वज्जासामि।" तए वं सुदंग्यं सिष्टिं सम्मायियां एवं वयासी 'एवं खलु पुता ! समञ्जूषे मालामारे (जात) घाएमाखे विदरह। चं मा वं पुता ! समयुं मायं बहावीरं यंद्रण निगच्छाहि।

माणं तव सरीरयस्स वावत्ती भविस्तरः । तुमएणं इहगए चेव समणं भगवं महावीरे चंदाहि नर्मसाहि ।''

तए णं सुदंसणे सेट्टी ध्यम्मापियरं एवं वयासी—िकरणं बाई ध्यम्माणसे समणं भागं भागं सहावीरं इहमागणं इह पणं हह समीसदं हह गए चेत्र गंदिनसामि ? । सं गच्छामि णं ध्यदं ध्यम्मयाश्री तुम्मेहि ध्रम्भणुएखाए समाणे भागं महावीरं वंदए !" तए णं सुदंसणं सेट्टि ध्रम्मापियरो जाहे णो संवाएति

सुदं देवाणुष्यमा ! मा पिडचंच करेद !'' तए व से सुदंसखे अन्माविउद्धि अन्मणुष्याए समाखे पदाएसदुरपावेतादं (जाव) निचा पायविद्वारचारेण रागमिद्दं

बहुद्धि श्राधवणाहि (जाव) परुवेचए ताहे एवं वयासी ''अहा-

## श्चरजुराए मालागोर

तन में में भाजुगान माधानार तथा प्रदर्भी व्यापन्थं मधानी उद्देश उद्विता सदमक्षे मधानीमान एवं बयामी--

'तुरमे लं देवाणुष्यिया ! कं कदि या मंत्रियण ! त्तर में में सुद्देशमें समयोगासल अनुमूर्य मालागार हो वयामी---''एवं खलु देवालुप्तिया । श्रद्धं सुर्द्धमां नार्म मम<sup>नी</sup>

वामण् श्रमित्यजीवाजीवे गुणमिलाएँ चर्तः समर्वं मार्वे महाबीरं चंदए संपरियए।''

तए ण से अञ्चल भारतागारे सुदंगणं समलोगा<sup>म</sup>

एवं वयासी---''ते इच्छामि एँ देवागुष्विया ! श्रहमवि तुमए सर्वि

समणं मनवं महावीरं वंदित्तए जानी पजरासित्तए अदासुद्दं देवाणुष्पिया ! मा पहिषंधं करेह ."

सप में से सुदंसमें समगीवासप याजगुम्मं मालाग

रेणं सदि जेखेय गुणमिलए चेइए जेजेव समजे भगरं मह

षीरे वेणेव उवागच्छर । उवागमित्रा श्रञ्जूण्लं मालाग

ेखं सिंह समर्ग मगर्व महावीरे सुदंसणस्स समखोवासगस्स श्रञ्जुणवस्स मालागारस्स तीसे प [०] पम्मकहा [०] सुदंमखे पडिगए।

तए णं से श्रञ्जुषण् मालागारे समणस्य मगवश्रो महावीरस्स श्रीतर्थं धर्मं सोचा निसम्म [इह.] "सर्हामि णं मंते ! निरगंशं पाचवणं [जाब] श्रन्धद्वेषि । श्रहासुई देवाणुष्यिषा ! मा पडिचंथं करेह ।"

तए यं से खड्रुष्णर मालागारे उत्तर [-] अयमेश पंचहुंवर्ष तोपं करेंद्र । करिया [जाव] अयगारे जाए [जाव] विदर । तर । के अगृतुष्णर अयगारे जो प्रदेश में हैं [जाव] पञ्चरण से अगृतुष्णर अयगारे जो प्रदेश में हैं [जाव] पञ्चरण से अगृतुष्णर अयगारे जो प्रदेश में हैं [जाव] पञ्चरण से व्याव हमें एपारूनं अमिगाई उम्मिवहर । कप्पद मे जावजीवाए छट्टेंछ्ट्रेणं अधिकियलें तवोक्तम्मेणं अप्पालं भावेशयास विदरिलए । ति कहु अयगेशारूनं अमिगाई ओगिरिहना जावजीवाए [जाव] विदरद । तए खं से अञ्जूषण अयगारे स्ट्रह्मदायण-पारावांति पदमाण पोरिसीए सम्मापं करेंद्र । वर्ष सं

तए गां तं चारतायां अगुनारं रायगिहे नयरे उच

( 30 ) महल्ला य जुशाया य एवं वयासी---

भजा पुत्ते पूर्या सुण्डा० । इमेण मे श्रवण्यरे संवण

पण्याभूएणं अपण्येणं नवाहारं आहारे ।

इमेर्णं मे विता मारियए, माता मारिया । भाषाभिषी

संबंधिपरियणे मारिए " ति कहु अप्पेगइया अक्कोसंति

श्रप्पेगइया दीलंति निदन्ति खिसंति-गरिहति तुर्जिति तालेंति । तए णं से अञ्जुखए अखगारे तेहि वहहि इत्यीहि य पुरिसेदि य डहरेदि य महल्लेहि य जुतागएदि य श्राती-

सिजनमाणे (जाव) तालेजनमाणे तेसि मणसा वि श्रपउस्प्र-माणे सम्मं सहरू सम्मं खमर् तितिक्यर् श्रहियासेर् । सम्मं सहमाणे रायगिहे नयरे उचणीयमहिकामकुलाः अडमाणे ज्ड मर्च लहर तो पाणंन लगर, जर पाणं तो भर्चन

लहर । तए एं से भन्नुएए मालागारे अदीणे अविभी यक्लुमें समाइते सविमादी अपरितंत्रज्ञोगी यहरू । श्रद्धिना रायगिहाको नगराको पहिलाक्लमह । पहिला क्ष्मित्ता जेणेर गुण्मित्तए चेर्ए जेणेर समसे भगरी महाबीरे जहा गायमसामी (जाव) पडिदन्सिता समणेणे

भगवया महानीरेणं अन्मणुप्याप अमुन्दिए विलामिक तर मं समने मगर्थ महाबीरे धवण्या संविधि पहिलितगन्द । पडिणितगिभा गर्दि जणाय निहरह । तर् णं से व्यव्याप् व्यापारं तेर्णं कोरासेणं प्रवेषेणं पगादिष्णं महासुनागेणं त्वोक्रमेणं व्यपाणं मारेमाणे पट्ट-पुण्णे हम्मासे मामण्यारिमाणं पाउत्यह। पाउत्यिचा व्यद्ध-मासियाप् संसेहणाप् व्यपाणं कुतेह। कुनिषा तीसे मचाई व्यवस्थाप् छेरेहः छेदिषा वस्तद्वाप् कीरह[बाय] सिद्धे।



## महावीरस्स गुराकित्तरां

तद पं से गोसाले भेरालिश्च सहालशुचेषं समयोधा-सद्गं अयाडाइङजमाणे अयरिजाखिज्जनाणे पीड-फलग-सिञ्जासीयारहृयादः समयस्य महावीरस्स गुख-क्रिचर्णं करेनाणे सहालशुचं समयोशसर्य दुर्गं वसारीः—

'समणे भगवं महाबीरे महामाहणे'

से वेखट्टेण देवाणुणिया ! ०वं युच्यद्-'समग्रे मार्ग महाबीरे महाबाहणे, एणं खतु सहासमुद्रा ! समग्रे मार्ग महाबीरे महाबाहणे उरण्याख्यस्टन्सययरे जाव महिय-पुरुष जाय तथरुमधीपयार्थपत्रसे से वेखट्टेणं देवाणुण्यया ! 'एगं युवर्- 'ममणे मगर्च महापीरे महामादणे।' केलं देवालुन्विया ! महागाँथे ? ममणे मगर्च महार्दे

महागांवे ! में कंण्ड्रेणं देवाणांविया ! जाव महागांवे ! दं राजु देवाणांविया ! ममने मगने महावेरि मेनाराडेरि बहुवं क्षीवं नम्ममाणं विणम्पनाणं तरवनाणं क्षित्रमने मिनवमाणं विज्यामाणं चम्ममण्यं देवेनं मारस्यम्ये संगावेमाणं निव्याणमहावार्वं माहन्यि संगावर् से विगाउँव सहालपुता ! एनं युव्वह्—

लपुत्ता 1 एवं युव्वर्---'समपो भगवं महाबीरे' महागोर्व ।'

केखं देवाणुष्या ! महानत्ववाहे ! महालत्वां समणे मगने महावीर सेसाराहवीए बहुव जीने नहमनार् विवाससायी जाव विजुत्पकाले पत्तमप्तवा पत्यां सार्वक माणे निन्याणनहाषद्वधाभिन्नदे साहरिव संवादे, से वि दुर्ण सहाजनुता! एवं नुक्चर—'समणे भगनं महावी महासत्ववाहै।

केर्ण देवाणुष्यिया ! महाचम्मकदी ?

सम्बे मगर्न महावीरे बस्मक्दी १ वर्न एकु देवाएँ
 जिया ! सम्बे मगर्न महावीरे महदमहालयिन संसारि बहुन बोने नस्समाणे विज्ञता

भिज्ञनाची लुप्पाणे विलुप्पमाये उमगमपहिन्ने सप्यह-विवण्ये भिज्ञननसाभिभूए श्रष्टविहरूमनतपदलपडिन्स्यने वहुदि श्रट्टेडिंग जान नामासीदि य नाउरंना यो संभारकंता-साबी साहर्कि मिल्यादि, से तेस्ट्रेणं देशसुर्विन्या ! एवं सुबाह—'सम्मे भगवे महाबीरे महाबस्यनद्दी' ।

के णं देवाखुष्यिया ! महानिजनावस ?

समयो भगवं महावीरे महानिज्यान्य । सं केखहुणं १ व्यं खतु देशापुरिया ! समयो भागवं महावीरे संवार महा-समुदे पदवे जीवे नास्तागों विधारमागों जाव विज्ञुप्तायों बुहागाणे तिमुह्माणे उपियागों प्रभामदेश नावार विभागा सीरामिष्ठदे साहस्थि संवादे, से तैयाहुणं देशापुण्या ! व्यं खुबर—'समये मगवं महावीरे महानिज्ञागाय' !

नंखिनुते गोसाक्षे

तेणं काहोणे तेलं ममएणं सावस्यी नामं नपरी द्वीरकः, प्रमान । तीते पं सादस्यीए नगरीए वहिया उत्तरपुरन्दिने दिक्षिमाए तस्य याँ कोहए नामं पूर्र होत्या, दशका ।

क्षेत्र पाटामध

( 38 )

तत्य णं सायत्वीए नगरीत हालाइल नाम कुंनकारी

बाजीविकोतासिका परिवर्गत, ब्यून जाव स्वरिप्तः बाजीविष्यमप्पेसि सद्धा गदिषद्वा पुष्टित्यद्वा पिरिष्टियाँ बहिनिवर्षेमास्तरास्या सप्ताउने ! बाजीविषव<sup>म्स्</sup> बर्पाणं मावेशाण विहरः ।

तेर्णं कालेणं तेर्णं समर्एणं गांसाले मंदालिपुत्ते चउडी-सनासपरियार् हालाहलाएं कुंभकारीर् कुंमकाराव<sup>र्णीं</sup> ब्याजीतियसेयसंपरियुडे-ब्राजीविय समर्वणं ब्रप्याणं भा<sup>त्र-</sup>

भाषो भिहरह। तर्षे णं तस्त भोधालस्त मंखलि पुत्तस्त अन्तर! कदायि श्मे छदिसा चरा बंतियं पाडम्भवित्या, तं जहाँ-!

साये २ बर्लंदे ३ कपियापार ४ अन्छिद्धे ४ अगिवनेता यये ६ अमुणे गोगापुषुचे । तए वं ते छ दिसाचरा अद्वविद्धं पुट्यापं-मगाइस सतैद्धिं सति दंससेद्धिं गिडाईति, स० २-दिचा गोसाह

संबलियुषं उपहुरद्धः । वर् णं से गोसाले मंदालियुषं वेर श्रद्धंगस्य महानिमित्तस्य केयार् उद्योवमेणनं सन्वर्धि वावार्र सन्वर्धि भूवाणं. सन्वर्धि जीवाणं, सन्वर्धि सत्त्वार्वं इमार्द्रः श्रव्धकर्माणज्ञारं वागरवारं वागरेति, तं बहा ''१ ला २ श्रवारं वे सुदं ४ दुवर्षं ४ जीवियं ६ मरणं तहा"। त्तप् पं से गोसाले मेवलि पुने तेणं अट्टंगस्म महानिभि-त्तस्म केख्डब्र्बोयमेनेणं सावस्त्रीए नगरीए श्रतिखं त्रिष्ण-लावी अव्यरहा अरहप्पलायी अर्देवली केवलिप्पलायी, श्रस्टवनन् सञ्जन्यस्त्रायी अत्रिखं त्रिख्सर् पासेमाखे विहरह ।

तए में सावत्थीए नगरीए सिंघाडम जाव पहेंसु बहुजशो

यक्षमन्त्रस्त एवमाइनखर् जाव एवं परूर्वति— 'एवं खतु देशासुणिया ! मोसाल मंखलिपुचे त्रियो त्रियप्यतावी जाव-पगासेमाथे विदर्शतः से कहमयं मन्ने एवं ' ? तेचं कालखं तेजं समएणं सामी समोस्तरे, जाव परिसा पिडेम्या । तेजं कालेणं तेणं समएणं समयस्य ममत्रको महावीरसः जेट्टे ब्रोतेशाधी दंदभूती यामं प्रयापारे गोयमगोचेणं जाव स्कृद्धं कट्टेणं एवं जहा विविष्मण् विस्तुर्देसए जाव—प्रवसासे बहुत्रस्वाद्विसामेलि, बहुत्रस्यो अक्षमध्यस्य एवशाइस्ट्यरं । एवं खतु देवासुध्यिया ! गोसाले मंस्विद्धप्रेचे त्रियो

पर्व ! तार जो भागी ने पहुंचलास अंतिर्थ एकाई सीला प्रवे ! तार जे भागी ने पहुंचलास अंतिर्थ एकाई सीला मिसम जाल-आपतह जार-मचराण पढिदंति, जार पज्यासमाचे एवं बवासी—"पर्व खतु आई भंचे ! छहुं ते चेर बाव-जिज्ञाहर पगावेमाचे विद्रति । से क्रइंमर्य

जिखापलाशी जाव-पगासेमाणे विहरति, से कहमेपं मन्ने

भंते ! एवं ? तं इच्छामि णं मंते ? गोगालस्म मेंछिजिङ्ग्<sup>ला</sup> उहालपरिवासियं परिकहियं ! 'गायमादी समले मणं

या विद्यास्या ।

पुत्ते, त्रिणे जिलप्यलावी जाव - पगासे माणे विहार तर्ण

मिच्छा । थई पुण गाँवमा । एवमाइक्लामि जाउ पहली 'एवं रातु एगस्न गीमात्तम्म मंदातिपुत्तस्य मंविति<sup>तित</sup> मंद्रं पिता होत्या । नस्य णं भंवितिस्य मंदान्स महानाम भारिया द्वीत्या, सुकुशत्र जार - पडिस्सा । तए में स महा मारिया श्रमदा कदायि गुन्तियो पानि होत्या । हेर्न कारीमं तेणं समप्रं मध्यत्व नामं नंतिरते होत्या । रिक्र रियमिय० आव ~ सक्षिप्रण्याम, वसादीए ।

, तस्य में सरवण मैनियेस गोबद्धते नाम माहणे परि यमति, अङ्गोताय-अगरिभृत, रिउटगद्दः जाय-सुर्गानि द्वित् या वि दीस्था । तस्य णं गीवतृत्तस्य मादरास्य गीमार्व

तए में से रेखती रेखे बचया कदावि महाए भारि पाए गुव्यिलीपु सदि चिचकत्त्वनहत्यम्ए मंश्रवस्त्रणं श्रणी मावेदांखें 'पृथााखुकृष्टि चरमाणे गामालुपामें दूः जनम वेजीय संखणे संतिवेसे वेणीय गोबहुलस्त माहणस्त गीमा

महावीरे मगने गायमं एवं वयायी-जण्मं गोयमा ! त बहु जले थयमसम्म एवनास्क्यार, 'एवं एउनु गामानी मंगीन वेशेत्र उत्रागच्छा, ते० २-च्छिचा गीपहुलस माहणस्त गोसालाए एगरेमंनि मंडनिक्सो करेति, भंड० २ करेचा मरवर्ण संनिजेसे उच-नीय मजिमनाई क्लाई घरमग्रदाण-स्मिभवतायरियाए श्रहमाखे वमहीए गव्यथो समेता मग्गण-गनेसणं करेति, वसडीए सुन्यक्षो समैता मम्मण-गनेसणं करेमाणे बाह्यस्य धमृद्धिं बालममाणे तस्मेत्र गोपहुलस्स-माहणस्य गोसालाए एगदेर्मनि वासावासं उदागए । तए पं सा भद्रामारिया नवण्डं सामाणं बहुविडाद्रवार्थं श्रद्धदुषाण साईदिवाणं बीनिक्संताणं सुकृताल • जाव पडिस्पानं दार्शं पयाया । तए मं तस्य दारगस्य श्रम्माविवरी एकारसमे दिवस बीतिवर्को जाब बारमाहे दिवसे अयमेप सर्व गाण गुणनिपहरनं नामधेर्नं करेंति —"जम्हा वं श्रम्हं इमे दारम् गीवरलम्म मारणस्य गीमालाए जाए वं होड णं श्रम्हं इम्हम दारगरस नामघेर्ज 'गोसाले' 'गोसाले' चि । तप र्णं तस्स द्वारमस्य ' ब्राम्यावियरी नामधेखं करेंति ' 'गीमाले'-ति । तए णं गांसाल दारए उम्हक्त्वालमाने निण्लाण परिस्परमेचं जोव्यसमस्स्परन्ने सपमेय पाडिएकर्र चित्तपत्तमं कांति, सपमेव० २ कांचा चित्तफलपहत्वगए मैखनणेखं श्रापाणं मानेमाणे विहरति ।

# गोसालस्स मरगां।

तक् वं सं गोमाले मंगलियुचे भवागो मर्ग भागोरा आभीहत्ता आजीविए धेरं नहावीर, आo सहावेता एर वयासी — तुम्मे ण देवाणुष्या ! ममं कालगरं आणेत स्रभिणा गंभीद्वणं पढाणेड, सुरभिणा गंपीदण्णं पद्मालिना पन्दलसङ्गालाए गंग कासाईए गागाई लुदेह, गाए ब्हिना सरसेव गोमीस चंदवेलं गायाई ऋणुनिषद सरसेव गोसीस चंदणेलं नामाई श्रमुलिविचा महरिहं हंमलसर्व पडमाडनं नियंसेह मह० २ नियंसिचा सञ्जालं कार्याभृति करेंड, स० २ करेंचा युरिससहस्मयादिश्चि सीर्य दुस्हें पुरि० २ दुरुहित्ता सावस्थीय नेपरीय सिंपाडम० ड पहेंस महत्या सहया सह व उच्चोसेमाचा एटा बहह- (५ रात देवाणुष्पिया । गांताले मंतालेजुने जिसे जिसपालार्थ जाव नियसह पगासेमाणे विहरिषा हमीस श्रोमण्खार चडवीसाए तिस्परार्थं परिमे तिस्पर्रे, सिद्धे जाव सन्त दुष्यणही गाँड - इहिसकारसम्बद्धण्यं मम सरीरगस्स गीहार्थ करेंद्र । तए मं ते थात्रीतिम थेरा गोतालस्य मंदालिपुर स्त एवमहं वियाएणं पडिसुणेन्ति ।

वए वं वस्त गोतालसा मंत्रलिपुचस्त सचरचीर परिसमार्णीत पडिसदसम्मचस्य अवमेपादने अन्मतिपर

नाव समुष्पत्रित्या यो। सञ्ज यहं जियो, जियप्पलाबी, नाव जियसदं पगासेमाणे विहरति ।

ब्रहं णं गोरा।ले चेत्र मंखलि<u>प</u>ुत्ते समरापायए, समरा-मारए, समस्पिडिसीए, व्यायरियउनम्मावाणं व्ययसकारए. श्रवनकारए, श्रकिचिकारए, बहुद्दि श्रसन्मावुन्मावणादि मिच्छत्तानिनिनेसेहि य अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा बुद्दारमाणे युष्पारमाणे विहरित्ता सर्प्णं, लएणं अन्नाइद्वे समाणे अंतो सचरत्तस्य विश्वअत्वरिगयसरीरे दाहवक्कं-तीए छउमस्ये, चेव कालं करेस्सं । समणे भगवां महावीरे जिणे जिल्पपलायी जाव जिलसदं पनासेमाणे विहरश'-एनं संपेहेति एवं संपेहिता ग्राजीविए थेरे सहावेह का० २ सद्दानेता उचावयसवहसाविए पकरेति। उचा० २ पकरेत्ता एवं वयासी-- 'ना खलु श्रहं जिणे जिखपलावी, जाव पगासेमाणे विद्वरद (विदृरिए) बाहुन्नं गोसाले मंखलियुत्ते समग्रायायण, जाव छउमत्थे चेत्र कालं करेस्सं, समग्री मगर्नं महावीरे जिणे, जिणप्यतायी, जाय-जिणसद्दं पगासे-माणे विहरह, ते तुक्ने णं देवाखुष्यया ! ममं कालगयं जाणेचा, वामे पाए सुंबेण यंवह, वा॰ २ वंधित्ता तिक्रखुची मुद्दे उन्युद्दए, ति॰ २ उन्युहित्ता, साधस्थीए नगरीए सिंघा-डग० जाव-पहेंसु आकरिकाई करेमाणा महपा महपा

संदर्ण दायोमेमाणा २ एवं सदह— नो खलु देवालुणिया। गोताले मंदालिपुच निय, निल्यादानी, जाव विद्वारित, वर् मं गोमाने चेद मंदालिपुच ममण्यायप, जाव छउमधे वे कानगर । सम्य मगर्न महादीरे जिसे निर्माणनारी जाव विद्वार, महामा व्यक्तिकृति मान्यार साहदर्ग महामा गहरा नीहरणं करेजाह! – एकं पदिचा कालगर ।

## .

## पमाय-सुत्ते । पमार्थ कम्प्रमाहंसु, ऋष्यमार्थ तहारहे ।

तव्मादादेममा यापि, वाले पंडियमेच वा ॥ कहा व योडव्यमया पनागा, खंडे बलावाचमणे जहा य

प्रमेत भीरापरणे सु तप्ता, मोई च तप्ताववर्ण वर्षति ॥ सर्गा य दोमो तियकम्मशीये, कम्मे च मोहल्मर्य वर्षति ॥ दुस्तं हर्य अस्म न होर मोहो, मोहो हमो अस्म न होद तप्ता ।

दारा दवा जाम म होट् सोहो, मीटी दमी जम्म म हिस्साई ही

रमा बनार्य न निवंदियन्त्रा, बार्य रसा दिनिकत नरार्च। दिनं च कामा 'समिमइवंति,

दुर्म बहा साउफले व पवली॥

रूने विरनी म्यामी विसीती, एएस दुक्खोंद्वर्यस्य

न जिप्पर भवमञ्के वि संती,

ं जलेख वा पोक्षपतिशी पत्तासं स र्यविदियत्या य पर्णस्य 'थतथा.

द्वनादमस्याः व् कालस्य अत्याः, द्वनादसः हेर्ड मणुयस्यः संगिषाः ।

ते चेव योवंति कपाइ दुक्ती, न वीवरागस्य करेति किंचि ॥

न कामभोषा समर्थ उनित, न यावि भोगा विषदं उनेति।

वे तप्रक्रोसी य परिगाही य,

सी तेतु बोहा विगई उनेह ॥ कारतकालपानस्य समी

भाषादकालप्यवस्त स्तो, सन्दर्भ दृश्यस्य प्रमोक्सममा ।

विषाहिक्यों जं सम्रविध सर्वा, कमेश कवंत मुद्दी मर्वति ॥

## कसाय-सुत्तं ।

कोही य माणा य अणिगाहिया,

माया य लोगी य पत्रहुमाणा। यचारि एए कसिया कसाया, सिचंति मुलाई पुराब्मवस्त ॥ कोडो मार्गच मार्थच.

सोभं च पावबहुर्य । वमे चचारि दोसे उ. इच्छंवो हियमपराणे ॥ कोही वीह

पणासेइ. माणो विखयनासणो। भाषा भिचाशि नासेइ.

सोभो सन्द विखासणी ॥ उवसमेख इस कोई,

मार्थ महत्रया जिसे । भायमञ्जन — मावेख, सोमं संतोसको जिसे।)

कसिणं पि जो समं सीयं. पडिपुणां दलेख इकस्स । नेगावि से न संतुस्ते, ध्र दुष्पुरए हमे आवा ॥

बहा लाही वहा लोही, लाहा सोही पत्रट्टर ( मास-कर्ष कर्ज. कोडीए विन निट्रियं॥ चह वपंति कोहेख. माखेण भाइमा मई । गर्पडिग्याक्री, माया लोहाको दृहको मयं म सुवएस-रूपस्स उ पन्त्रवा भने. सिया हु केलाससमा असंख्या। बरस्स लुद्धस्स न तेहि किंचि, इन्दा हु आगाससमा प्रपंतिया ॥ प्राची साली जवा चेत्र. हिरएपं पसुभिस्मह पहित्रप्यं नालमेगस्म. इह विका वर्ष परे ॥

कोई च माणं च तहेर सापं, स्रोभं चउत्यं मन्धन्ददीया । एकाव्य वंदा बरहा-महेसी,

न दुव्यह् पावं न कारवेह ॥

4 - 2-12 114 4 61646

# श्रष्माय-सुतं।

में य करें पिए माए, लंद वि विश्वीकृत्य / साक्षीय चयद मोठ, से हू बाह नि युक्या । वत्यमंत्रमलंकारं, इत्विधी संपर्धाति व । मन्त्रेत से प अंति, न से शह वि पुत्वह । दहरें य पासे बुद्धे य पासे, ते याच यो पानर सन्मतीए। उनेहरू छोमानिलं महत्ते, पुद्रो पनचे सु परिन्यवज्ञा ॥ जे मगाइयाम् नहार, से जहार मगाइयं / ते हु दिद्दमण ग्रुगी, तस्त नित्य मगार्म। इन्में सर्थगाई, सए देहें समाहरें ! पानाई महाबी, श्रम्भाषेण समाहरे । एवं ना सहस्ताणं, मासे मासे गर्व दए! वस्त वि संज्ञा सेथे, व्यक्तिस वि क्रिक्ण । नायस्त सन्त्रस्त प्रगासणायः, यन्त्रस्य मोहस्स विश्वसणाः रीमस्त दोतस्य य संसदस्य, प्रमृत सीन्छं समुदेह मोहर्ग तस्तेस मण्या ग्रहतिद सेगा, विवन्त्रम्या मास्त्रमस्त्रम् वर्षा संस्काय एवंत निसेय्या यु सुचत्य संचित्रयया पिर्द वा याहारमिन्द्रं मियमेसिक्यं, सहीयमिन्द्रं मिउक्तरपुर्वि निद्रयमिस्ट्रीन विवेशनार्गं, समादिकामे समये तपसी। ने वा समेनना निउषं महात्रं, गुवाहिनात वनच जनम

ŧ,

एकोवि पायाई विवज्जयंती, विहरजज कामेतु स्वस्त्रज्ञमायो ॥ जाई च दुर्ज्ति च इहज्ज पास, भूपाई मार्य पिडलेद जाये । तम्हा डाईवज्जो पर्सा ति नचा, मम्मत्तरंसी न करेद पार्य ॥ न कम्हुषा कम्म खर्वेति पाला, अकम्हुणा कम्म खर्वेति धीरा। "

### चडब्विहा समाही

सुर्भ भे भाउस् ! तेर्ण मगदया एवमक्खार्य । इह खलु थेरेदि भगवंतिह चचारि विख्यसमादिहाखा पत्रचा । कपरे खलु ते थेरेदि मगवंतिह चचारि विख्यसमादिहाखा प्रकृत १ ।

हमें ख़ुन्तु ते घेरेहि भगवतिहि चत्तारि विखय समाहि-हाखा पत्रचा । तंत्रहा — विखयसमाही, सुप समाही, तव समाही, व्यायार समाही ।

विग्रुष्ट सुष्ट्र य तवे, आवारे निच पंडिया । अभिरामयंति अप्याणं, ने मवंति निदंदिया ॥१॥

चउन्विहा खलु विखय समाही मबर, तं जहाः—श्रख सासिन्त्रंतो सुस्यमह । सम्मं संपहित्रजह । वेयमाराहर्। न ध ( 84 )

मगर संवन्गहिर। चडत्थं पर्यं भवर। भगर इत्य मिलीगी

वेदेश हियाणुमासणं, सुम्ब्मश् तं च पूर्णो बहिहिंग्। न य माणमएग मसइ, विणय समाहिमायपहिए ॥३॥

चउन्त्रिहा खुलु तव-समाही मवह । वं जहाः 🗝 री

लोगहुयाए त्यमदिहिज्ञा, नी वरलोगहुयाए त्यमहिहिजा नी कित्ति-यज्ञ-सर्-सिलागद्वाए त्वमिहिद्विज्ञा । नवत्

निज्ञरह्रयाए तवगहिहिज्ञा । चउत्यं एयं भवद् । अरह् ब इत्य सिलागी-विविद्द-गुण-तवीरष, निर्च मवद निरासए निजरहिए ।

तवसा धुणह पुराण वावगं, जन्तो समा तत्रसमादिए ॥ चउव्विहा सत्त आयारसमाही भवद । तं जहाः – नी रहलोगहचाए कायारमहिद्विजा, नी वरलोगहु**या**ए क्रावार-

महिद्धिण्या, ना कित्ति-वन्तमहिसलोगद्वाए भागारमहिद्धिया नक्त्य आरहेतेहि हेऊहि आयारमहिहिस्का । चउत्यं पर्य भनइ। भगइ य इत्य सिलीगी। तिया–ययय-रए अतितियो, पडिप्रका भयमाभयहिए।

समाहि-संबुडे,

भवद् व देते, भावसंबए ॥

(88) ावयाँ भाग व्यथ्यों विष्यमुक्के । स्रमियम चुउरी 🧺 े व्यवसागमं गए ॥ र्राक्ट्र ह विउल्रहियं मुख्यं 🥱 Parti. बार मरणाची हुन्ह ! दुच्चरं । PRI CA सिद्धे वा इवा 🗫 क्खुणी ॥ it. जमे । कर त्यां दकरं ॥ , ज्ञणं दुक्करं ॥ पालिए 🍖 वाए (सन्त्रणा । हायीरस्य सुदुक्करं ॥ नेग्गं**धे** या क्ट<sup>्र</sup>ं मीयणवज्ज्ञणा । गेएग क्ट<sup>्रिट</sup>्वो सुद्दकर्र ॥ पेहुंडे इंड क्कर ... मंसग वेपणा । Ť जन्लमेव च ॥ बह **⊣-परिसहा** ः ∤ Hξ श्रलाम्या छेमेग

तेत्र पाउलके ( v= )

संबद्ध तम्म पी, दारण यावत्तरी कलामी य, गिक्लाइ बीइडारिए क्षीव्यरोग य मंपन्ने, सुर्या तस्य स्वयदं मजे, विवा चार्गेद स्तिति वासाए कीलए रम्मे, देशे देश देशों जड़ी बाह बालया कायाद, वामायासीपरी पागइ वज्रहर्ग वरमपंडगुमामागं, बरमं सं पासिङ्ग संवेगं, ममुर्पाली इग्मध्यकी बापुच्छम्मापियरो, पञ्चए बाणुगारिये

बाहोऽसुमाख कम्मार्थ, निरतार्ण पावनं इमें संबुद्धों सी तहि भगवं, परम संवेगमागदी। बहितु सगांव महाकिलेसं, महंत मोहं कसिएं मगावं परियाययम्मं चडिमरायएज्जा, वपाणि मीलाणि परीगृहें व

शहित सर्व च श्रतिषुगं च, तत्तो अर्थमं श्रप्रतिगाई व

सच्चेहि मूएहि दवाणुक्षेत्री, खंतिवलमे संजय वंम्यारी सावजनोतं परिवजयंती, चरिज भिक्स सुसमाहिई<sup>द्रिए</sup>

पडिवाजिया पंच महन्ययाणि, चिन्छ प्रम्भं जिल्देसियं विर्

कालेण कालं विदरेस रहे, पत्तापलं नाणिप अप्याणी प सीही व सहे य न संवसेजा, वयजोग सुचा न अमुच्याई सन्नाण-नाणोवगए महेती, अणुक्तरं चरित्रं चम्म संवरं अगुत्तरे नाण्घरे वसंसी, श्रोमासई स्रार्प बंतलि<sup>क्त</sup> दुविहं खवेऊरा य पुरायापानं, निरंगयो सम्बन्धों विष्यमुक्के । वरिचा समुद्दं व महामत्रोयं, 'समुद्दपाले' अपुर्यागमं गए ॥

#### 000000000

#### सामरागां

तं विवनम्मावियरो, सामवर्षं पुत्त ! दुच्चरं । ग्रणाणं त सहस्साई, धरियव्याई मिक्खणी ॥ समया सञ्चभूएस, सन्तमित्रेस वा जमे । पाणाहवायविरह. जावज्जीवाए दुक्ररं ॥ निच्चकालप्पमत्तेणं, ग्रुसावायविज्जणं । मासियव्यं द्वियं सच्चं, निचाउत्तेख दूकरं ॥ दंतसोहणपाइस्स. अदचस्स विवज्जणं ) श्रमवज्जेसण्ज्जरस, गिएइमा श्रवि दक्कर ॥ विरई अर्वमचेरस्स, कामभोगरसन्तुखा । उग्गं सहन्दर्यं वंभं, घारेयन्त्रं सुदूबकरं ॥ चउविष्हे वि श्राहारे, सहमीयखबज्जला । संतिही संच्यो चेव, वज्जेपन्यो सद्दक्तरं ॥ छहा तण्हा य सीउण्हं, दंस-मंसग वेयणा । श्रकोसा दक्खसेजा य, त्यफासा जन्लमेव च ॥ तालना तज्जणा चेत्र, वह-वंध-परिसहा । दक्तं भिक्छायरिया, नायणा य भलामया।।

डामारनिवविदियम्मिरम् ] ह्रमामार्श्वमंगरेमे, मिन्स समलहमहर्गद्दगमागाउगमा, उद्गारपाडिपुताग्नीमावर्ग, बल्लीखरमाण्युत्तमयम्, सुन्यरम्, बीलमंगन ह्योनदेगमार, भाषाभियनावठदलकिष्द्रभगारतसुकानिमानुभारुदे, झा-दालियपु दरीयस्थाये, कोयामियप्यत्तवक्तान्छे, सायपुरुवतु गणाम, उवनियमिलप्परास्त्रियकन सम्बन माहरोहे, पंडुरमिसयलविमलनिम्मलमागोक्सीरकेण इंददगरपम्रयालियाचवलदंतमही, सरांडदंते, अन्तुःउप-

दंवे अविरत्तदंते, सुणियदंते, सुनायदंते, एगरंतमेगी विव अधेगद्ते, हुपवह्णिद्रंतभोगनत्तन्त्वन्तरत्त्वन तालुजीहे, अवद्विय सुविभक्त चित्रमंद्र, मंसलम्बियपसत्यः सह लिविउलक्ष्युए, चउरंगुलसुष्पमायकंपुवस्सरिसग्मी<sup>3</sup>, वरमहिसवराहसीहसह लाउसमनागत्ररपढिपुपखनिउलक्तं खुगसंनिमपीचररम पीतरवडह सुसंडिए सुसिलिह विसिद्धपर थातान्य । विरसुरव सीपपुरवरफलिहवश्चिष्ण्, सुपगीसरविउलमीन कायाणकतिह उच्छूददीह्याह, दिणतत्तोवश्यमज्ञयमंतत सुज्ञायलक्ख्यपसत्य अन्छिद्वाणी, पीवरक्षीमलवर्ग्यली

सुज्ञामलक्ष्यपत्तः, भागस्त्रामलः संस्मापलन्तिः संसापलन्तिः संस्मापलन्तिः संस्मापलन्तिः संस्मापलन्तिः संस्मापलन्तिः संस्मापलन्तिः संस्मापलन्तिः संस्मापलन्तिः संसापलन्तिः सं

क्यागिसलायलुअलपसत्य ं। सिरिवच्छंकियवच्छे।

श्रकरंडुण्कणगरूषगनिम्मलसुजायनिरूपद्दयदेहपारी, श्रष्ट-सहस्मविडयुण्णवरपुरिसलक्खणवरे, सण्णवनासे, संगय-वासे, सुन्दरवासे, सुजावशासे, नियमाइयवीखरइयवासे, उज्ज्ञपसमसिहयज्ञचत्रशुक्रसिण गिद्दश्राह्ञज्ञज्ङहरमणिज्ञ-रोमराई, सत्तविहमसुजापपीणकुच्छी, सत्मीपरे, सुइक्ररणे, पउमविषडणामे, गंगावत्तगपयाहिणावत्ततरंगमंगुररवि-किरणतरुणवीहियमकोसायंतपउपगंनीस्वियहणामे, साह-यसोर्णद्रमुसलद्रपण शिकरियनरकणगच्छस्सरिसवरनहर वलियमज्मे, पष्ट्रवरतुरगसीहवरवङ्टियकडी, वरतुरगसुजाय सुगुज्कदेस, ब्राइएणइउन्त्रशिह्नवलेत्रे, वरवारणतुल्ल विक्वविल्तियगई,गयससणसुत्राय संनिमोह्र,ससुग्गणिमग्ग-गृहजाण्, एणीकुहविदावत्तरहाणुप्नजेषे, संठियसुसि-लिइ ( विसिष्ठ ) ग्इगुण्फे, सुप्पइहियक्तम्मचारुचल्ये, श्रणु-पुन्यसुसंहपंगुलीए, उपण्यवसुतंत्रशिद्धस्य वसे, रचुपलवच-मउपमुकुनाल-कोमलतले, धहसहन्सवरप्रिसलक्खणधरे, मगरसागरचनकं कवरंगतं वलंकियचलयी नगनगर विसिद्धस्त्रे, हुपनहनिद्ध्यज्ञलिय तढिताउग नरुणरवि क्रिरण सरीरतेष, अणासवे, अममे, अक्रिचणे, दिससीए, निरुश-लेथे, वयगयपेमसगदीसमोहे, निग्गंथस्स प्ययणम्सदेवए सत्यनायमे, परदावए, समणपई, समणेगविदपरिवट्टिए, 

जह कियागफला**र्ण** परिणामी न सन्दरी। एवं भुजाय भोगाणं परिषामी न सुन्दरी । श्रदाणं जो महंतं त श्रप्पाहेश्रो पवाजर्र । गच्छंतो सा दुही होइ छुदा-तण्हाए पीडियो ॥ एवं धम्मं अकाउणं जो गच्छड परं भवं। गर्छतो सो दुही होइ वाहि-रोगेहिं पीडियो ॥ श्रद्धाणं जो महंतं त सपाहेश्रो पवज्जई । गर्व्छनो सो सुदी होइ-छहा-तण्हाविविक्रयो ॥ एवं धम्मं पि काउणं जो गच्छइ परं भवं। गच्छंतो सो सही होइ अप्पक्रमी अवेषणे ॥ जहा गेहे पलिचिम्म सस्स गेहस्स जी पहूं। सारमंडाणि णीणेह समारं स्वयउनमह ॥ एवं लोए पलिचम्मि लगाए माखेण य। अप्पाणं तारहस्सामि त्रव्मेहि अणुमन्त्रियो ॥ भ्रम्मा-वियरोः-सामण्णं पत्त ! दच्चरं । गुणाणं त सहस्माई यारेवच्वाई भिक्खणा ॥ समया सब्बभूएम् शत्तु-वित्तेस वा अगे। पासास्वायविरहे जावज्जीवार दक्त ॥ निच्चरासध्यमचेणं समावायविवज्जणं मानियव्वं हियं सच्चं निचाउत्तेख दक्तं ॥

( 29 )

दंतमोहणमाइस्म श्चदत्तस्स विवज्जणं । व्यणवज्जेसणिज्जस्स गिण्हया व्यवि दुवर्त ॥ विरई अवंगचेरस्स काममीगरसन्तुगा । उग्गं महर्द्ययं बंभं घारेपञ्चं सुद्रकरं ॥ धरा-धन्त-पेतवम्होस पश्चिमहिववज्जणं । सन्वारंमपरिचाधो ँ निम्ममत्तं सुदुकारं ॥ चउव्यिहे वि व्याहारे राईमोजगवन्त्रगा । संनिर्दिसंचक्री चेव वज्जेवच्या सुदुखर ॥ ·छुदा-तण्हा य सीउण्हं दंस-मसगवेषणा । श्रकोसा दुवससेजां य तस्प्रपासा जल्लमेव य ॥ त्तालणा तज्जणा चेव वह-वंध-परीसहा । · दुक्रां भिक्खायरिया जायणाय घलाभया ॥ कावोया जा इमा वित्ती केसलोय्रो य दारुखो । दुवर्खं चंभन्त्रयं घोरं घारेउं च महप्पणो ॥ सुद्दोइयो तुमं पुत्ता ! सुक्रमालो सुमञ्जियो । न हु सी पभू तुमं पूत्ता ! सामण्णमणुपालिया ॥ जावज्जीवमविस्सामी गुणाणं तु महब्मरी। गुरुउ लोहभारुव्य जो पूत्ता ! होइ दुव्यहो ॥ त्रागासे गंगसोउच्य पडिसीउन्य दुत्तरी। बाहाहि सागरो चेव तरियम्बो गुणीदही ॥

भागनी:--विस्तरन की ! जी है कि जनपर ? मगर्ने महाबीरः किल्तरचे दिस्त माल्यम तेशिक्ष

बारवंतिम विश्वविद्यालया है। वर्गायण विश्वविद्यालया विश्वविद्यालया विश्वविद्यालया विश्वविद्यालया विश्वविद्यालया मन्त्रीरमण्यु रिरायनाम् यार्गनवीत्त्रात् संस् । आर्थ गरिमा में करवावा सेवारवान सरिव्हर १ विदिवामें विश्व य मार् ।।

मीववंतः । प्रमुप्त दायः वो जोत्र तोत्र कि जलवः है

मगर् महावीरे: --रम्भारतम् च महावामा स्थापु रहारो सिकार । व्यागास्थरने च भ नवड , व्यागासिक में की

मारीर-माणयाणं दृषताणं छवण-भवण मेतागारेणं वे की कार, काशाबाई व गुर निश्तमंत ॥

गीववी:--गुरु-गार्शानवतुष्युवनात् नं भेते ! शी कि जनवर ?

भगवं महावीरः -- गुरु-माहस्मिगमुख्यमाए व रिगर पहिवत्ति जणसर । विणयपिष्ठाकी य में अपि अणबागायणः नेस्य विस्थित - जीतिय - मल्यस्य -देवद्वार्यकी

निरु भर । वयम्येजल्या भनि बहुमारायाय मनास्य देवगारी नियंग्रह, सिद्धि सीमाई च विमोद्देश । यमत्याई च बं विशाय-मुलाई सन्दरमाई साहेश । मने य बहते की विशिइत्ता भवद् ॥

गोपकी:—ष्मान्तीयनाए वं भंते ! श्लीवं (कं अन्तर १ मगर्व भवावीर:—ष्मान्तीयनाए वं मापा-निगाण— विच्छाद्वेयापनलायं मोषप्रमानिगायं व्यंतिसंसार वेयावां उदार्ण करेश । उज्जानार्य प अगवद । उज्जानाय-वरिक्त्रे ए वं श्लीवं ष्मार्थ हस्योधेवनपूर्णगपेर्य प न र्षयह । प्रवर्द प वं निज्जरेश ।

गोयमी:-- निद्गुपाएलं भेते ! जीवे कि जयपह ?

मनव महावीरः—िनिद्यायायणं वन्द्राणुतायं जायवर्। वन्द्रशाणुगवेणं विरञ्जमाये करणगुणसिदि विडेवनजद । करणगुणसिदिहिषसे म र्ण स्राचगारे मोहिणाओं करमी दरवायर् ॥

गोपमो:—धपडियद्वपाए नं संते ! अश्रि कि जायपर ? मगव महाशेर:-धपडियद्वपाए निस्सामं जायपर ! निस्तंगचेणं अञ्चले एक एक तिस्या य रामो प ध्रमजन्मा गाय धपडियटे वाचि विहरह !!

नाथ अप्याहपद्ध गाव विद्युद्ध ॥ - गोपमीः—विचित्तसपणासणयाण् णं भेते ! जीवे किं अखयः १

मगर्व महावीरे:— विविचसमणासण्याय चरिचगुरि जण्याः । चरिचगुचे य शं जीये विविचाहारे दहचरिचे, एर्गतरए मोकलमात्र वृद्धिको महविद्दकमसाँठि :

भगवं महावीरं:—सध्वमावपश्चनसासीणं क्रनिवर्धि लगयः । ऋणियद्वि पहियन्नं य अगुनारे चत्तारि धेर्यातः कर्मांसे खरोड । सं जहाः-योगीगणजं. थाउपं, नार्यं,

गोपं। तथ्रो पञ्छा सिज्कर, सुजका, सुगा, सव्यर्वधाण<sup>र्ना</sup> करेंद्र ॥ गीयमो:-पडिरूक्षाए ण मंते ! जीवे कि जर्णमः !

मगर्यं महावीरे:-पडिस्वयाए लाघविर्य जगवर् । लपुभूए णं नीये अप्यमने पागडलिंगे पसत्यतिंगे विमुद्धमम्मते सत्तसमिश्ममते सञ्चवागभूयत्रीवसत्तेमु वीम-

सणिजनस्ये अप्पडिलेडे निरंदियं विउल्तवसमिहसमन्नाग्र यावि भवद्र ॥ गोयमो:-ये यात्रच्चेणं मंते ! जीवे कि जगुयइ ? मगर्व महावीरे:-वेषावच्चेणं निरुवधरनामगीर्त कर्म्म निर्पेघर !

गोपमाः-सञ्यगुणसंपद्मयाए णं श्रीत ! जीवे कि जण्यह है मगर्वं महावीरेः-सञ्ज्ञानुमंदश्रयायः अपुन्ताविधि बखपर । अपृणरापिनि पत्तय य णं जीवे सारीर-माणुसार्थ

दुक्याणं नी भागी मवह । गोयमी:--बीयरागयाण र्ण भेते ! जीवे कि जग्रयः ? मगर महावारि:--शीयरागयाण नेहालावंचलाणि ल्यालुर्वषशाणि य वोच्छिद्द६, प्रसुन्नामसुन्नेसु स६— प्रस्ति-स्व-रस–गंधेसु चेव विरज्जद्द्र।।

गोयमो:—संतीए णं भंते । जीवे कि जसपर १ मगर्व महाबीरे:—संतीए परीसहे जिसह ॥ गोयमो:—सनीए णं अंते । जीवे कि जसपार १

गोपमोः—मुत्तीए जं भंते ! जीवे कि जयवह ? भगवं महावीरः—मुत्तीए व्यक्तिवर्ण जत्तवह । व्यक्ति यथे य जीवे अस्यतोलाणं पुरिसाणं ध्रवस्यशिजो भवह ॥

गीयमे:----श्रज्ञयवाए भं भंते । जीवे कि ज्ञायब ? मार्च महाबीर:----श्रज्ञयवाए काउज्जुयर्ग, मादुण्ड्य<sup>र्ग</sup>, मादुण्ड्यर्ग श्रविसंवायणं ज्ञायद । श्रविसंवायण संब्ह्ययाय यं जीवे चम्मस्स श्राराहण मगद ।।

गोपमी:—महवपाए णं भंते ! जीवे कि जाणवर ?

मगर्व महावीर:—मदवपाए व्यक्तिस्तवर्च जाणवर !

मण्डिस्तवर्चा जावे सिजमदस्तवेष्ठ्रे अञ्चनपठाणाई निहार्वर !!

गोवमी:—मायसवेणं मंते ! जीवे कि सवायरं है मु म न मायसवियों मायविसीहिं खवावरं । आव-विसीहिय पहमाचे जीवे सार्रवारात्रस्य सम्मस्य काराह्याचाय कम्बद्धे है। यस्रवेजप्रस्य सम्मस्य स्थारहण्यायः कम्बद्धिता, प्रस्तोगधममस्य काराहर मृतद्य ।।

जैन पाठावर्ग ————

(33)

गोवमो:—करणसचेणं भंते जीवे कि जायवह ? भ० म०:—करणसचेणं करणसत्ति जणवह ! काण

म० म०:—करम्यस्यण फरणसात्त जाग्यः । पद्माणे जीवे जहा वाई तहा कारी यावि मयर ॥ भोपमो:—जोगसञ्जेणं मेते ! जीवे कि जययर !

गोयमो:-जोगसञ्चेणं संते ! जीये किं जख<sup>यह ।</sup> म० म०:-जोगसञ्चेणं जोगं विसोडेह !! गोयमो:-मखगुचयाए जं संते ! जीवे किं जख<sup>यह !</sup> म० म०:-मखगुचयाए जीवे एगमं जखपह । <sup>एमगः</sup>

भ० म०:-मधगुत्तवाए जीवे एगरमं जायवह । प्रा<sup>त्तर</sup> चित्ते र्णं जीवे मयानुत्ते संज्ञगराहष्ट् भवह ॥ गीयमो:--यगुत्तवाए र्णं मंत्रे जीव<sup>े</sup> किं जायपर्<sup>१</sup> ग्र०म:--यगुत्तवाए निव्वियार्शं जायवह। निव्वियारे<sup>गं</sup>

भ०मः-ययगुषवाए निव्ययार्शं ज्ञायह। निव्यपारं ज्ञोवं वरगुष्ते अञ्चल्पनोमसहस्रात्रस्य सावि विहरह ॥ गीपमोः-कायगुष्तवाए णं संवे ! ज्ञीवं कि ज्ञायह ! भ० म०:-कायगुष्तवाए संवरं ज्ञास्य । संवर्ष

' हातवाँ भाग ( 209 ) गोयमो:-वयसमाहारखयाए भन्ते ! जीवे कि जखयइ ?

म॰ म॰:-वयुसमाहारखयाए वयसमाहारखदंसखपञ्जने निसोहेर, वयसमाहारखदंसखपञ्जवं विसोहिचा सुलह-. पोहियत्तं निव्यत्तेः, दुल्लह्बोहियत्तं निज्जरेः ॥ ं गोयमो:-कायसमाहारणयाए णं भंते ! जीवे कि जगयइ १ म० म०:-कायसमाहारणयाए चरित्तपज्जवे विसोहेट ।

वरिचवज्जवे विसोद्वित्ता छाहक्खायचारित्तं विसोद्देह । मद्दवखायचारित्तं विसोहेत्ता चत्तारि केवलिकम्मंसे खदेह । तथो पच्छा सिरमाइ, युजमाइ, मुचाइ, परिनिन्नायइ सन्न-दुक्साणमंतं करेड ॥ गोयमो:-नागसंपन्नगए णं भंते ! जीवे कि जगपह ? म•भ•!-नाणसंपद्मवाए जीवे सन्वभावाहिगमं जणयह

नामसंपन्ने मं जीवे चाउरते संसारकतारे स विसारसह ॥ श्वहा धुई समुचा पिडझा न विशासह तहा नीवे समुचे गीयमी:-दंसणसंपनपाए णं मंते ! जीवे कि जणवह !

.संसारे न विण्यस्सइ । नात्यविण्यतवचरिचनोमें संपाउण्यह सक्षमयपरसमयविसारए य असंघायगिन्ते मन्ह ॥ म । म ः - दंसणसंपन्नवाए भन्निच्छत्तछेवणं करें! । परं न विज्ञायह । परं अविज्ञाएमाणं अणुत्तरेणं नार्वहेत त खेखं अत्वाणं संजीएमाचे सन्मं माने माखे विहरह ।।

भीयमी: परिकामणेली भीत र भीते कि जणमा है

म • म ः परिक्रमणेलं ययस्थितालि विदेश । विदिन वयस्थिहे पुण भीते निष्ठद्वापये अमयनगरिने अध्य पत्रमणमापामु उपज्ञे अगुद्दशे सुख्यालिहिदिन, विहरस्।

गापमी:-फाउगमाणं अति । तीये कि जमपर ॥

भ • भ • :- फा उपयोगं सीयपदुष्यश्चं वापिष्यतं विविदेशे विसुद्रपायन्त्रिसं प जीवे निय्नुपहिष्ण ब्रोहरियम्हन मारवढे पसत्यज्ञाणीवगण सुदं सुद्रेणं विद्रस् ॥

गोयमो:--पश्चक्षाचेणं भंते ! जीवे कि जगपद र

म॰ म॰:-पश्चक्खाणेणं कासबदाराई निंह महा पर्व-क्लाग्रेणं इच्छानिरोदं सणपर । इच्छानिरोदं सण्यणं जीवे सञ्बद्ध्ये सु विश्वीयवण्दे सीर्भूष विद्दर्ह ।

शोधमी:-यत्रपुर्ममलेण ! संते ! जीवे कि जणयह ? म० म०:-धवपुरमंगलेणं नाख -दंसण-चरित्तं

मिहिलाओं जणया । नाण-दंसण-चरित्रमोहिलाअंसंवसे म मं जीवें अंतिकरियं कष्पत्रिमाणीयवित्तर्गं आराहणं व्यासहेंद्र ॥

गोयमी: -कालपडिलेहणपाए ण मेरी ! जीवे कि

जगपः १

म॰ म॰:—कालपढिलेहस्ययार नासावरसिखं कम्मं विद्

गोयमो:-पायच्छिचकररोणं भंते जीवे कि जणयह ?

म॰ म॰:—पायस्छित करखेणं पायविसीर्दि जखयह, गरुभारे पाति मनदू ! सम्मं च णं पायस्छितं पडिनज-णि मगं च मगफर्त्तं च विसोदेह । खायारं च खायारफर्तं खाराहेर ।

गोपमो - खमावरायाए णं मंते ! जीवे कि जरायद ? ।

भ० प्रः :---खमावणयाए णं वन्हां यथमार्ग ज्ञायह । न्हां यणमावष्ट्रवाए य सञ्चराषा भूवजीवसचे गु मेचीमाव-प्रणारह । मेचीमावष्ट्रवाए यावि जीवे भावविद्योर्हि काऊषा नेन्मए मवह ॥



## गद्दमाली-संज्ञाः य

मंत्रको रागाः — मंत्रको महमम्मीति मगर्त ! बा राहि से ।

गहमाली श्रम्पारीः--अमयो वित्यवा ! तुन्मं अमयदाया भृताहि व! श्रीणच्चे जीव लोगांना कि हिंसाए पसज्जीत ? ॥ ज्वा सब्बं परिचरज गंतब्बमयसस्स ते । अखिब्चं जीवतीर्मास कि रण्जिम्म पराज्जिम ?॥ जीवियं चेव रूर्व चिक्नुमंपाय चंचलं। जत्य वं मुज्यति रायं! पेचत्यं नावपुज्यति॥ दाराणि य सुपा चेव मित्ता य तह बंधवा ॥ जीवंतमणु जीवंति मयं नागुन्वयंति य ॥ नीहरंति मयं पुत्ता वितरं परमदृक्तिस्या । विषरी वि तहा प्रचे चंध रावं ! तर्वं चरे ॥ त्रभो तेणज्ञिए दच्ने दारे य परिरक्षित । कीर्लंति सर्ने नरा रापं ! इट-तुट-मलंकिया ॥ वेख वि अं कर्य कम्मं सुर्द या जह या दूहें । फम्मुणा तेण संजुत्तो गच्छाई उपरें मर्ग ॥

मीऊए तस्त्र सी धम्मो अलगारस्य श्रीतरः। महया संधेगनिक्षेदं समायमा नराहियो । मंत्रमी पाउँ एवं निरमंती तिल्यास्ले । ग्रहमाजिस्म मगवभो भणगास्म श्रीतेष ॥ -

संवोहशा . इंग हहा सत्य-विसारंयत्तं

श्रग्रत्थहेऊ य गिरापड्चं ।

् विएणाण-वेइत्तमवत्युर्यं घ

नासाइयोऽज्यत्त्वज्ञहारसी चे ॥१॥ दीवं समुद्रस्मि तरुं मरुम्मि

दीवं निसाए भगणि हिमे य ( काले कराले लहए दुसवं

भारमध्यत्तां चहुमाग्धेमो ॥२॥

धारमाप्य सज्जे पसरंत—तेए मगाप्पराष परिभासमाखे ।

कचो तमी समझ मीग-पंकी

सिग्धं पलायंति कमाय-चौरा ॥३॥

मवी झटंनी मवनककवाले भुजीब भीगे बहुमी बहुचा।

तहावि दिचि अगयी श्यामि मयुमभोगेसु गवेसए वं ॥४॥

सच्चे पराष्ट्रीण-दमा इहतिय

को कं मर्वतं पमरेश्व काउं। सर्प दलिए। हि कई समस्यो

इवेज्य काउं सिरियन्त्रमधं । ॥४॥



( 40 )

समुद्द-मनमे निरियो गुहाए पायाल-देसे विश्वसालये वा ।

वों भाग

कहिं वि गच्छेज्ञ,न मच्चुणो तु इवेज गुचो ति-जय-प्पहमी ॥११॥

संसार-दावरिग-हहिज्जमाणे सपेन्त्र धम्मीववर्ग जिझी चे। न तस्स दुक्लाणुमवावषासी

तमी तवन्ते तरिखम्मि फची १ ॥१२॥ पोम्मत्य विज्यचवला, ऋष्य-हुंमन्त्र देही, सिमियान्त्र सङ्गी ।

मन्यू पुणो संनिहिमी पिसल्लो, हुवेन्त्र ता धम्मनिहिच-चिची ॥१३॥

जेखेय देहेण विचेगहीला संसारवी घस्स कुणंति पीसं । देहेण विवेगवन्ता तेग्रेव

संसारवीत्रम्स इत्यंति सोसं ॥१४॥ बा उसई चावनई च झित्य ं पुरायस्स पावस्य च जम्मिश्रं रां ।

पुष्णे समत्ते विद्वो अवेश

ता नस्सरे को ग्रु सुइम्मि मोहो । ॥१४॥

( 50 ) जैन प्रधानन रन्दा सुरा चक्रवरा नरिन्दा भोर्यसिम्। या सुविरीसुरमा। सय्ये स-कम्म-प्यमया मयन्ति संवास को कम्म-फलम्मि मोही !॥ निसा-विरामे दिश्रही समेह

दियावमासे च उनेह राई। वहेच विस्से गुह-दुक्ख-चककं नाउ अधीरीमवर्ण न बुज्जा ॥१ एगोऽत्यमुचेइ एगो सहस्तरस्ती विद्यो जहेंस । उवागमे थावय-संप्याणं

वहा महन्ता वि समच-जुना गहुज्जलं हाहयमिग्ग—वावे सिद्या महेती तह व्यावयाए । द्रवय-पसंगो खलु सत्त-हेम-इमो लयो माइस्हो <sub>सिसुचे</sub> तास्यण-काले विरुषी-सही य । प्रच-मही . हपेर. बरागमे

परिवराणाण् कस-वड्डिय-व्य ॥१६॥ न मोद-लंकोऽप्य-एदो त होर ।,२०॥

जण्णा अस कि मरणं मर्ग कि गया है मार्ग ज़या स्था कि ? कि संपम निम्नल उसका या

जं मोह-पासुत-मणी सपा सि ! ॥२१॥ स एव घीरी स च एव वीरते स एव विज्ञं स च एव साहू वेशिदियाणं उत्तरी स-सप्ता वित्यारिका माणस-निजयेण ॥२२॥

बहेदियासा मण्-स्व-स्बो . जुनई तेऽत्येष्ठ तहा चर्लति ।

पार्डति गड्डे गुणमूदमर्च इा ! केरिसं एस परासयर्च ! ॥२३॥

सहावांची सन्त्रों पववई तथायां ति-हुमाणे किलेसाशुक्तेश मगद मणुद्दीनतीतद्दित सी।

त एवं संसारं मृखिम दिसमं द्वस्वश्रद्धं महत्त्वा निस्संगी हविम्न निम-मृत्यामि रम्प ॥२४॥



भैन वाश्वाद्त्री

(60)

तत्य य दो महिलाओ एगं पुत्तं वबहिया घेतुं । मिष्यभो ताहि अमयो मो सामिय ! सुषासु विसर्ति ॥२१॥

मिष्यभी वाहि व्यनचो मो सामिय ! सूर्यासु विनात ॥२०॥ परवागपार्णमम्हं दूरा देसंतराउ पह-मरर्थ । संजायं, दविद्यानिमं पुत्तो य हमो समित्य ति ॥२२॥

सजायं, दायणाममं पुत्तो य इसी समात्य । ता शीइ एम पुत्तो दिवस्य दि दुतीइ निब्ह्यं होई। सामी य पह् काली अस्ट्रे तुम्हं सर्मीस्य ॥१३॥

हाता य पहु काली अन्हे तुन्हें सर्वसीय (१०००) ता ग्रह भग्न विशामी एगी परिच्लिल्स तहा कृषानृ!' पुर्व पर्ण च दाऊण मासियं हो अमन्वेय (१२४) ''अपन्ये ! पुन सपुन्तों का खिलस्तर सुदं निशार्जन''!

"बारो ! एन मपुरो का बिजिस्तर सुदं विवाउति" । इय मिन्हिन समय्ये भाजिये महासम-पुरोल ॥२॥। "बहु तुम्हाणवणुमा शिवायमेयं भाई सु बिद्राभि" । सन्दर्भित्वण तेर्ण सम्बद्धा सहितात ता दो ति ॥२६॥

सण्मात्रपण वर्ग नाम्य महत्वाद ता हो वि विशेष ग्यन्त्रपुष्टवर पर्ग पूर्ण प्र' नमी तहा क्य तार्दि। हक्षियं कावणं प्रणाम सामा व हो वि क्या ॥१०। पूर्णस्य नाबिदेसे कावणं या द्वामा करणाय। कार्यवियं, 'न सम्म व्हिन्दर व्यो विश्वाट' नि ॥१०।

कागिवियां, 'न समार व्याप्त एका विश्वाद्य कि ।।वदा सर मुच-समानी निर्दितियम् निर्देश स्थितः समार । भिर्त्तत दुन्ता विश्व देशाल्या होड-नुब-मानाः ।।वद्दा। सायसम्ब-मुक्ता सह-न्यन मुक्ती हमार स हमीए।' दिल्लाहियां निर्देश सह बुन्ते स सम्बन्ध द्वारात ।।व्हा

( 52 )

रवोनीमो निज-संदिराम्म तो तीइ सी अमच-सुच्छो । रीनाराण सहस्सं कयन्तुयत्तेण से दिशं ॥३१॥ के चउत्य-दिवसे रायसुत्री निगामी नयर-मज्मे।

माबिपं च "संति जइ मज्म रख-संगत्ति-पुरुखाई ॥३२॥ वी रापहंतु बारं," भह तत्पुराखीदएख तत्व खणे।

क्युर-रापा अनिनित्तमेव जाभी मरख-सरखी ॥३३॥ म्पूर्वो य, पदचा गवेसचा रजजोग्ग-पुरिसस्स । नेनिचित्रोवरहो ठवित्रो स तस्म रजम्म ॥३४॥ प्वारि वि तो मिलिया प्रमणंति परोप्परं पहिट्ट-मणा । पानत्यमेचकिचियमन्द्राणं, तो मणीत एवं ॥३४॥ "दनश्चमण्यं पुरिसस्स पंचर्ग, सहपमाहु मुदिरं 1 द्वी सहस्त-मुद्धा, सप-साहस्ताई पुष्पाई ॥३६॥ सत्याह-मुमो दनखत्रयोण सही-मुमो व रुरेण ।

प्रदीर समय-सुमी जीवर पुण्येदि राव-सुमी" ॥३॥। पाइय-मासा क्रमिन्नं पाइभक्ष्यं पटिउं सीउंच जेन आसंति ।

मामेश्र पाइमकन्य पाठ ।। कामस्य वस-वर्षि युग्वि, ते कह म सन्वर्षि १।। १॥ (स्पानन्यार्थ-१५) पहली सबक्त-बंधी पाऊच-बंधी वि होई गुउमारी । परमा सरकर असिमारिता विविधानिकाणे ॥ २॥ -( 44, may- :



श्रह देवी मण्डह निवं "कि जोण्डा ससहरस्स वि परोक्खे । ' विद्वह १ कत्यह दिट्टा उ केण रविणो पहा मिला १ ॥१६॥ ता न सुपूर्ण कज्जं, तुब्साणुमयं मएवि कायच्यं ।" इप नाउं निय्वंचं तीसे ठविउं सुवं रज्ते ॥१७॥ तायस-दिक्खं राषा पडिवजह धारिखीह इहियो वि । थोद-दिवही य ठीए गृब्मे आसि चि तो समए ॥१८॥ नाथो पत्तो तयणंतरं च सा आइसेस मरिकरा । देविचेणुप्पन्ना काउँ वण-महिसि-स्वं च ॥१६॥ खिनइ कुमारस्स मुद्दे दुईं नेहेख ब्यह्मकी विद्धि । सी वक्कलेडि टविश्रो हो वक्कल-चीरि-नामी चि ॥२०॥ श्रद्ध कडवप-वरिसंते रूवं ललिपं श्रेणुत्तरं ठस्स । त्रिष्ठवं पप्तत्रचंदेण राइणा सम्रो प पच्छतं ॥२१॥ वेसार्षं भूयामी महिषावसंज्ञाय-जोव्यख-मराध्ये । भइसप-रुववईमो रायस-रुवाई कारविउ ॥२२॥ संजोहक्त एंडाई पनर-दन्वेहि मोयए तास । हत्ये दाऊण तमो बहु-पाइक्डइ-क्रलियाम्रो ॥२३॥ संपेतिपाउ वहिंगं सनिहाईएं गए कलबहिमा । वक्रत्वीरिस्त कलाणुगारियां मोयए ताउ ॥२४॥ टेन्ति तमो मुंबेउं पुच्छर कत्यासमिम जापन्ति । एरिस-महर-फलाई १' वो वाश्रो मणंति "एपाई

जैन बाउरा ने

( #1 )

कागरत तेल मंत्रित गया विष्ति-कलाई<sup>।</sup> तह तामी !

बद्द-कामानुवादि-बार्यान् स्रोति एवी ॥१९१

"कात्य का दिली" की मुना गढ परियोग भीताओं। बाक्त कलाहरूल स्वाद इक्त हि चनवार्य ॥क्रेश कल्चरमाना क्या त व मिनियो ताल नेव विवस्त कार्याच्य व'रवर्गत दिहा स्कृष्टम बहित्म ॥३० बल्ला व नेव बन्द बन्नामा पुरुषका व में भाग बाजियां जिल है जल बाँदर्ज का स्वर्ध कार्यन गी है। है है इंत्रात वर्ग इत्र भगविताः माहित्<sup>त</sup> गव्य ४ , ध्यत्य व अरबर कविष्ठान स मुल्हा हुइ हु ॥३३ men' side ex st' at some family frat [1 ar mit ist sient tomit t mig tiest till A THE THE EAST OF DE A PROOF BY LOOK remit to during a mile and fe till पत्र केर दिश्य बाल नाम बाम निर्म 

नाम मेर्ड गढिर नेना सन्निज्या स नारि मर्ग । ०मः मन्त्रस्थाद भार-पृथ्विदि बादविषं ॥२८।

करण निवाणी अन्दे वि कावना ता तुमे पि वर्दि ॥१६॥

वीवलपुराभिद्वाणे फानाई जावनित बारामे निवर्ष )

वेसाए एकाए लोय-यसिद्धाए सिद्धि-किलियाए । नर-वेसिली य एका भूषा तीसे घरे यस्य ॥३६॥ नेमिनिक्ए कहियो पुर्व्वा पे हुसो पलोइयो लाहि।

नैमित्तिष्ण कहियो पुर्व्य पि हुसो पलोइयो वाहि । बरयाहरणेहि निहृतियो च ण्हायो बिलियो य ॥३७०० उपरण्य-काणुरायाप धृयाप कारियो स रयाणीप । पाणिगाहर्ण तसो गिञ्जह वाहञ्जप पणियं ॥३=॥ः रसो वि तयं कहियं वकलयीरी जहा व्यस्पणिम ।

ष्ठान्देहि सह वित्रको पिपरेल प ममह राष्पिम ॥३.६॥ तथी प धार-महंते दुक्तं आपं पमाप-समए थ । इक्तारिक्त्य मणिया प्राचिपा कृतिपण नरवहचा ॥४०.॥ " मह परिगम्म दुक्तं गूणं मणीरहा इन्या । जे पर्व पारन्वह गाहन्वह इहतुर्देहिं ॥ ॥४१॥ सो भीए मणियाप कहिये निर्मिष्णार-वर्ष्यं में ।

तावस इसरस्य य कार्मनाह परिनाहिनं सन्तं ॥४२॥
" देवस इसर—हमर्थ बन्धें न जागिय तको छान् हु " ।
पुन्ति ह क्षेत्रि दिही हे रह्मा पंतिया पुरिता ॥४३॥
प्रामिनाव देहि हि सामीर छह पहुरु मो देहि ।
क्षात्रिमिको य रह्मा स्वर्तिकद्मात्राचे ठहिको ॥४४॥
क्षात्राचि ह प्रत्यर-पुनावं माहिको हको वर्मिय ।
स्वर्ताव नि इ नरवर-पुनावं माहिको हको वर्मिय ।

एसो य तिव्बज्ञीए पिउणो रोबंतपस्स अच्छी थि । ध्यंतोगपाई नीलीप तह जह पेब्ळह न कि वि ॥१६॥ संवश्युरेस ते पे एस ॥१६॥ संवश्युरेस ते पे एस मारसमु रपणि-विर्मान । वफलपीरी वि कहमवि पियर सरिकण मृते ॥१९॥ मोपाय निर्मा निर्मा से पे प्रमाण लगीय वचामो । सह -सामगीए गया तथो दो वि विज-पास ॥१८॥ विश्व परामुगंतस्म परुष्ट -साल्वेस ॥४६॥ परिष्ट -साल्वेस ॥४६॥ सम्बर्ध सिंगी नीया नहा तो पेब्ळए हमी सर्व ।

पुण्यह पगमपंदं सन्वीमं कृतल-वर्गाह् ॥५०॥
बहलपीरी व मधी मर्ग्स उडजहम क्षप्पणा दर्दे ।
हहपाई बहलाई होटेड' माहण रेलु'॥४१॥
माडेडे। व विवित्र परित किरिया मण् विहिप-पुग्रा ।
संसह 'आहमरांगन मा वर्ष' पुण्यमणुपिनं ॥४१॥
विहिरियाई नत्य व बत्याह 'मेगोड दिया-माण् ।
सून व विद्या-माण् मंगरिका नधी महित ॥५३॥
मुह-मिर्यहरामी सामानं निर्ण विषय-मूर्ग ।
सहिर्यो मार्गा पार्थि नवस-नीह व ॥४॥
ही स्थिन-वर्ण कर्मी केल्ल-नार्थेश वेददल सन्वी

हेबपरिद्रम्भित्यो बामी वर्षप-हरी दि ॥प्रशा

पडिचोहए य विशरं पसलचंदें च सावयं कुणहं । श्विरि-वीर-जिख-सवासे मध्यो तको गिण्डिड पिनरं ॥४६॥ देक्खाविद्यो य सिक्खाविद्यो न सिरि-वीर-जिख-वरेगेसो । 'वक्छनवीरी -सिद्धो पिग वि गेतृण दिय-लोगे ॥४७॥ -सिनिम्स्सङ् युवकस्को मोजूल सुदेव-मणुय-पोक्खाई। 'इय जर-दृह-वारखयं सिरि-वीर-जिर्णिद-पय-कमलं ॥४॥॥

# श्रमय-दार्शा

बन्दवा व मेहरही उम्मुक-भूतकाहरकी पीतह-सालाए पोसह-जोग्ग-मासर्थ-निसएखो--सम्भत्त-र्यण-पूर्वं, जग-जीवहिषं सिवालयं फल्यं । राईमां परिकार्देड, द्वाख-विमुक्तं तर्हि धर्म ॥ एयम्मि देस-काले, भीको पारेवको मरभरेन्तो । पोसह-साल-महनका, 'रायं ! सरणं' ति 'सरणं' ति 1 'अमुझी' चि मण्ड्राया।'मा भाडि'चि मण्डि द्विभी श्रह सी। तस्य य श्रायुक्तमञ्जी पत्ती, विरिष्पी सी वि मणुष-भासी । नह-तल-त्यो रापं मण्ड्-"मुपाहि एपं पारेवयं एस मम भक्तो।" मेहरहेण मणिपं-"न एस दायव्यो सरणाग्रामी।" तिरिएस मिस्न-"नगवर ! जह न देखि मे सं सहियो कं सरखमुवगब्दामि ! चि ।" मेहरहेण मणिपं-"जह जीवियं त्रव्मं - वियं निस्तंत्रयं तहा सन्त्रजीताणं । भणियं च---

पालागे, झलानं जी करेर सलागे। ''शिम्

कलावी दिवसाणी कृष् जो नामें कलावी ॥ युक्तमाम उव्यिषेता, इत्या वर्ष करेड विद्यार ! वाधिदिद पुणी दुवर्थ, बहुयनर तिम्निमिषी एवं चलुनिही निरिधी महारू-धक्ती में घमपानी

भूपल-दूबल-महिमान १ " मेहरही मण्ड-"क्षे मंते हर्र हार्र देनि पुत्रना-पश्चिमार निमानेड बारेयव ।" निरिमी मनार-''नाई गर्व भव भव भारत, फुरकुरेत गर्न वार्त हैं बार्ड मानि .'' बेहर्राण माण्य'-एजिन्द' वारावमी हैं<sup>नैई</sup> मिनव मेर्न मन मरीमधी मिनहादि हैं। अपूर्व केंछि, नि

मम्द्र निविद्या । निवित्र नगरील व रागा वारेनव तनाए भार केरम बीय-नाम निगम मेर्स छन्छ-नहारी । ब्रह अह मुनेट मेंने, नह तह बारावची ब्रह तुनि ! इय प्रक्तिरम शया भारतम् नव हुनाए ३)

र ! दा ! नि तम्बन्धि, दीन इमें माहने क्वनियं ? रेरि क्रमार्थ सु वर्ष ने मुनद ना/रबंद बर्थ है बर्दाव देव बार देश दिल का आधे द्वित बलागे, असर पान्यों । लाना इ.व म्लडा तीत वर दवारीता दव स्टिह्न स्वारेष मध्ये ।

# वहू-चतुरत्तरां

अभग मन्म--रचे पह चेन्छ सिहाओ सीलमई निग्मवा।
विविद्यन्तिया आसपा सहरेख दिहा। चितिय 'नूर्ण पसा प्रमील' चि। गोसे महिलो समस्तं वृत्तो पुनो 'गव्ड ! हिंगील' च। गोसे महिलो समस्तं वृत्तो पुनो 'गव्ड ! हिं एता परिची कुसीला। अभी अञ्च मन्म-रचे निग्गेत्ख कर्य विगया आसि। वा एसा न खुजद गिंदे धरिउ'। हारो--

पण-रम वसकी उम्मग्गगानिया भगगुण-दुमा कलुमा (

महिला दो वि ब्रलाई क्लाई न्हव्य पार्टेड ॥ १ ॥ ता वराणित वर्ष विदृहरं?"
श्वेषा पुर्व—"ताय ! अं जुर्च तं करेतु ।" मणिया कहुता-"मही मामामे शिल्डह किर्म पेत्रिक्स कित्र कित्र क्षाय—संदेशको । जा चलाइ केष तुमं वर्ष वराणियि" । ता जिन्दानिक निर्मामविष पर्म इतीलें संक्ष्माणीय्वमाई महाते विद्याल चलिया नहारुदेख विद्विण तमं ।
शिक्षणा तमं ।
वर्ष्यो से मही वर्षो मई । विदृष्णा युवा वह—वाण्हायो

मत्त्व नई क्रीवरम् । तीए न मुक्काकी वाक्षी । सेहिया

शागभो दिहं परम-पचा-पर्स झडचंत-पन्निर्भ

3

चितियं 'श्रविणीय' चि ।

पत्ता एतियं भूमि । संपयं तु वासंती वायमी बहुई, जहा-'एयस्स कररि-त्यंगस्स हेट्टा दस-गुगवण-लक्छ-प्यमाणं निहा-णमिरय । तं घेन स मम करंबयं देषुं ति"। रमं सोऊण सहसा उहिमो सेही मण्ड-<sup>। वच्छे</sup> सचमेप ?" वह्ए जीवय - कि श्रालिय जीवजार ताप-गाणां पुरको । महवा हत्यत्थे कंकरो कि दप्पणेणं ति निहाले 3 साथी' । तथी तत्थेव ठिश्री सेही । महिय' निहाणं स्वर्णीए। 'यही ! मुत्तिमंती इमा लब्छि' चि जाय-यहुमायो वहुं रहे थारोविऊण नियची सेट्री । पत्ती नग्गोहं! पुच्छए गहुं-कि न तुमं इमस्स छावाए ठिया १' पहुए अविखय'-"रुक्ख-मृते अहिदंसाह भय, चिरासणे चौरादमय', हेड्डबो-काग-बगाइ विद्वा-नडण-मर्य, दर-द्विपाणं तु न सब्बं एवं ।" प्रणो पुट्टं मेडिया "ब्रमुद्दिस-"अत्य ताव कृट्टिशी" ति तए जीवयस्य को परमत्यो १" तीए वर्च 'नहि कुट्टिक्री त्ति स्री, किंतु पढमं जो न पहरह ।' सगर दह ग सेहिया युनं 'कहमेवमुब्बसं ?' तीए युनं 'जत्य नित्यं सवयो सागव-पाडियत्ति-कार्था ते कहं बसिमं ?' रोनं दह म सेडिया पढ़ें-'बहमेव' खदं !' ति । तीए वर्च श्चरमाधोदम्बं बुडीए कहिउत्य रोम-मामिया सद्धि सद्धं नां दह् या मांखर्य सिहिया-'कि तए नर्ए पायहां मी न

हृहाओ!'तीए जंपियं 'जल-मज्मे कीह कंडपाई न दीमह'ति पर्गो मिह सेहि । देमियाई तीए महि-चिहित-महस्याई। वहेंच पेहिया मजाए सुयस्स सन्दं कहिङ्स्य कया सा 'पर-सामियी।

--<u>क</u>ुभारपाल श्रतिबोध

## सज्जगा-वज्जा

• महणम्म ससी महलम्मि सुरतहः महणसंभवा लच्छी । सुपणी उस कहसु महं न-पालिमी कत्य संभुत्री ॥१॥ सुपणी सदसहावी महलिज्जनती वि दुज्जणपणेखा। छारेण दण्यो विष श्रहिपयरं निम्मली हो । २॥ मजरों न इप्पर चिय घह इप्पर महुलं न चिन्तेर। श्रद्ध चिन्तेह न जम्पद श्रद्ध जम्पद सजित्ते। होह ॥३॥ दहरीसकलुमियस्त वि सुपणस्त सुहाउ विष्पियं करो। राहमुद्दरिम वि ससियो किर्या अमर्व चिय मुपन्ति ॥४॥ दिहा इसन्ति दुवर्ध जम्पन्ता देन्ति सवलसोक्साहं । एवं विदिशा सुक्रयं सुयशा जं निम्मिया सुरहे ॥१॥ न हसन्ति परं न पुणन्ति अप्परं पियसपारं अम्पन्ति । एसी सुक्तसहाबी नमी नमी नाग प्रतिशापं ॥६॥ अक्ष वि कप वि विष विषे इसन्ता अवस्मि दीसन्ति। बन्धविष्पए वि इ पिपं इरान्ति ते दुन्तहा सुपरा ॥॥॥ सन्बस्स एस पपट्टे वियम्मि उप्पाद्द् वियं काउँ। सुपयस्स एस पपट्टे श्रवल वि विष् वियं काउँ।८॥ फरुसंनमखिस मिष्टमो वि हसिस हसिऊख जम्मोत्त विवादे। सज्जल ! हुनम सहानो न-पा(लमो कस्स सारिच्छो॥६॥

# मित्तवज्जा

एक चिय सलहिआइ दिशोस-दियहाण नवरि निव्वहणं। थाजम्म एकमेकों इ जेहि विरही चिय न दिही ॥१॥ पडिवन्नं दिखयर-वासराख दोवहं श्वत्वविडयं सुहर । धरो न दिखेण विचा दिखो वि न हु सुरविरहम्म ॥२॥ • मित्तं पय-तोयसमं सारिण्छं इं न होइ कि तेया ! श्रहियाएइ मिलन्तं भाषह श्रावद्वर पढमं ॥३॥ तं मित्तं कायव्यं जं किर वसल्याम्म देसकालाम्म । थालिहियभिचिवाउल्लयं य न प्रम्मूहं ठाइ ॥४। सं मित्तं कायम्यं जं मित्तं कालकम्यलीसिर्सं ! त्रयारण घोषमाणं सहावरक्षं न मेन्लेह ॥४॥ सग्याण निग्गुणाण य गरुया पालन्ति जं जि पश्चिमं। चेन्छइ यसदेश समें हरेण योलाविश्रो अप्या । द॥ हिज्जउ सीसं भह होउ बन्चलं चपउ सम्बहा लच्छी। विवसपालये गुपुरिसाम वं होर वं होउ ।।।।। दिवलोहसंबलाणं व्यमाण वि विविद्यासक्त्याणं । क्षाणं चिष शहिषयरं वायायन्यं इलीगस्य । हा।

.--

# साहसवज्जा

गहममगलम्बन्तो पावः हिण्डच्छियं न सन्देहो.। देखनमङ्गमेचेण सहुला कवलियो चन्दो॥१॥ र्वे कि वि साइसे साइसेण साइन्ति साइससहावा। वं मविक्रण दिच्यो परम्मुहो घुणः नियमीमं॥२॥ यरहरइ घरा सुन्भन्ति सावरा होइ विन्मलो दहवी। भगगवनसायभाइस-संलद्धजसाय घीराणं ॥ ३ ॥ वह जह न समप्पइ विहिचसेण विहडन्तक अपरिणामी। वह तह धीराण मणे बहुद विजयो सहुव्छाही॥ ४-॥ हिपए जामो जत्थेन बहुिमी नेप पवडिमी सीए। ववसायपायको सुपृत्माणं सक्तिसङ्गः पलेहि॥ ४ ।। न महमहणस्य पन्छे मन्ने कमलाण नेय खीरहरे। क्वसायसावरे गुप्रतिसास लन्ही पुढं वसह ॥ ६॥

# **दीरावज्जा**

प्रसम्प्रतावार्यम् मा अगामि जगेनु एतिनं पुत्रं। उत्तरे दि मा परिजनु एत्यममही कमो जेना।?॥ ता स्वं तत्तर प्रया सङ्ग्रा एवं इत्तरमा नावः। ना दिव तत्तर परिमाली देतिं। ति न मत्त्वर जातः।?॥ ।तिस्तर्यं वि इ सर्वं दीवं दरहेग् निम्मितं प्रताः। तास्य कि न नीर्षं अन्तरं परस्ववर्ग् ।३॥ पाणागरा तिष्यं जीहा घोलेइ बल्हमान्सीय। नागः बरनायण्यं 'देनि' नि वर्ष मण्यन्या। ४॥ दिलिण्यात्त स्वयन्ता उद्दित्तन्तं प्रनद्शा वयनेय। भानीपृत्ति हु दन्ता देख-स्वयन्त्रत्रे वेष्य॥ ॥॥

# रीयपयञ्जा

रे मानाम हुन्धे परिषातित्राम नामाधि न १६ तुर रिटले भराध नामे ति मा दोडा। १७ मानामने पर्यापनाम महस्तेष्ये निवना निवासिक रुप्यपनामम परमा तर्र अस्ति। १२० महत्ते मुस्ति। सारह माहहत्यान्ति म भनामे अस्ति ह महत्त्व तुरुष्ट्ये हुन्धे हाह। १३०

# र्भाद्यम्या

ः । नाम नीइवज्जा यन्तेहि श्रासन्तेहि य परस्स कि अप्पिएहि दोसेहि। थत्वो जसो न लन्मइ मो वि श्रमिची कभी होई ॥ १ ॥ शिसे सचसमिद्धे श्रालियपमुक्के सहावसंतुष्टे । वत्रयम्मनिवममहूष विममा वि दसा समा हो ह।। २॥ मीलं वरं कुलायो दालिई मन्त्रपं च रोगाथो। विजा रजाउँ वरं रामा वरं सुद्रु वि तवायो ॥ ३॥ मीलं वरं कुलाधी कुलेख कि होइ विगयसीलंगा। समलाई कर्मे संमयन्ति न हु हुन्ति मलिणाई ॥ ४ ॥ वं वि सुमेर समत्यो धणवन्तो वं न गव्यमुष्यस्र। वं च सविको निमरी तिस तेस अलिङ्ग्या प्रदर्श ॥ ४ ॥ छन्दं जो अलुबद्दर मन्मं रक्खर गुल प्रयागेर । सो नवरि मालुगाणे देवाल वि बद्धही दोह ॥ ६ ॥ स्यवश्रारेण धरिमा नामइ दिवसी इसीपण सुधे। इ.इ.लंबेश य जम्मी नागई पत्मी अध्मीय ॥ ७॥ हुएं प्रामं पपतं च पेतिमं पारन्तरवायं। राजगरहिको जम्मी राज्ञरणाय मंपद्रशा = ॥ धीरवज्जा

तिर्म बारह कर्ज पार्द मा कहि रि निर्तितेता। पादिशासियां क्यां इसे न निम्बन्ति॥१॥

दानांव र गान र

....

\$ 2 2 44

एंगे याया-

भीणिविद्देश वि सुपाणों सेवह रुषणं न वृत्सण् अपे।
सम्में वि सर्महर्म न विकिखर माखमाणिवकी। २॥
पं माना सुरुख्यले साखिणा! माखुमाण पुरिभमें।
अहवा पावन्ति मिर्ह खहम ममन्ता सम्पानित । ३॥
निम्द्रण जं विद्यार साल्यन्तां निहुषणं दि हितेण।
साखेण जे विद्यार साल्यन्तां निहुषणं दि हितेण।
साखेण जे विद्यार तमें दि लं नित्युरं कुनार॥ ४॥
से पत्रा नाण नमें ने महामा मालिणों। विरात्मा।
जे सहस्यसमारियंशिया वि असं न पत्रमिता। ॥॥

# श्रात्मसूत्र

इत्तान्त्रत द्रार्ण्ड हि ने मृत्यम बान्ध्या

बागर्न प्रत्या मुख्या ।

नी डेट्यमेरक यमुणवाता यम्भवाता य हो। निषा

राजान १ । हा. ४२

सन्तं थप्पे जिए जियं । 3, 8, 134 भणाः मित्तमभित्तं च दृष्णहियमुपहिद्यो । 3. 20123 मणा क्ता विक्रमा य दुहाल य सुहाल च । उ. २०।३७ थप्पा कामदृहा धेणु श्रप्पा मे नंदणं वर्णं । 3. 30 1 14 मणा गई वेवरणी ऋष्या मे कड मामली। , उ. २०। १६ न वं भरी कंटलिया करेई जं से कर अप्पणिया दूरपा 3, 3. 1 YS

# ज्ञानसूत्र

पये नाचे 4 1 1 £ 503 पदमें नाजें तभो दया। द्विदा बोही,गाराबोही चेष देवगुषीही चेष टा. २ टाला २,४,०० मार्थेष दिना य पूर्ति परणगुणा। 3. ₹=1₹+ नासमंबद्यवाए श्रीवे मन्द्रमावादिगमें अमवद्या उ. ६६ । ५६ व. चउद्दिश पुदी-उप्पर्या, बेदार्या, कम्मिया, परिदामिया । EL Y Z, Y, 19

नारंगरिस्म मार्ग । मारीय च हुनी हैं।, नरेच हो। नाहमी। सदा दू से बांतरशा मरेति । व देशनं बादर् में सब्दें बादर्, दे सब्दें बदर् से द्वें शादर 1

तीरे विषाय पररे, ग्रं दश्द बहुम्मून् <u>।</u>

१०२ )	
के देवाहिवई एवं हवह बहुस्सुए।	3. tt [ <sup>23</sup>

सक उदहिनाणारयणपहिपुरुणे एवं इवह बहुस्सुए । उ. ११ । ३० सुयमहिद्विला उत्तमहगरीसए ।

सुयस्स पुषणा विजलस्स ताइणो छवित्त कम्मं गइमुत्तमं गर्ग । 3. et 1 31

वसे गुरुकुले निच्चं। उ. ११। ३४ दर्शनसूत्र

सम्मत्तदंसी न करेइ पायं। ऋा. ३।४ ठ. २ उ, १८ । <sup>वृह</sup> नत्थि चरित्तं सम्मत्तविष्टणं ।

समियंति मन्नमाणस्स समिया वा श्रसमिया वा समिया होई। आर. ५ । १६४ उ. ≭

वीरा सम्भत्तदंसियो सुद्धं तेसि परकंतं ।

टंसणसंपन्नयाय, भवनिच्छत्तछेपणं करेंद्र । सम्महिद्री सया अमृहे । दशने. १० । ७ दिद्विमं दिहिं य लूमएआ।

स्य. १४ । २५ च उन्त्रीसत्यएणं दंसणिवसीहि जणवा । . 3. ₹€ ! € विविधिन्छममावस्यं अप्याणेणं नो सद्द समाहि ।

# चारित्रं सूत्र

चरित्तेल निगिधार

21. 1 21. YY 3. 95 | 94

साववाँ भाग ( ( ( ) ं विज्ञाचरणं पमोक्खं <sup>र</sup> स्य. ११ । ११ पंते धमिनिव्यहे दंते बीतिगद्धी मदा जए स्य. ८१ १५ महीवेगनतदिष्टीए चरित्ते पुत्त ! दुकरे वना लोहमया चेव चावेयच्या सुदुक्तरं । 3, LE 1 1E सामाधियमाह तस्स जं जो श्रद्याणं भये स दंगए । स. २ । १७ उ. २ तपसूत्र उ. १८ । १५ तर्वं चरे । रवसा धुणइ पुराण पावर्ग । दश. ६ । ४ च. उ. तवेख परिस्रज्मई । उद्या ३५ तवोगुणपदाणस्य उज्जुनई । दश. ४। २७ सर्व कुव्यई मेहावी । दश. ५ । ४४ उ. २ ंत्रवेणं चोदाणं जणयह। उ २६-१२७ परक्रमिजा तव संजमम्मि । दर्गः ⊏।४१ सब्बद्धी संबुद्धे दन्ते, बावा वं सुसमाहरे । स्य. ८।२० अकोहणे संघरते तवस्सी । Et 80 1 85

3. 9 1 84

ह्य. ७। २७

3, 3 1 30

च. ३२ । ४

अपा दन्ती सुदी होह।

ममाहिकामे समणे ववस्सी

वेवणिज निजरापेही

सो पूर्वा सबसा भावदेखा ।

र्जेन पाटावली

( 808 )

सीलं वर गुनो वा नानं निसंगदा सुरवामी ।

सीने दिनंतरम हु सच्ने वि शिरत्यवा होति ।। शियारै

जीयवही अप्यवही जीवदया होह अप्यक्ती हु दया । विमक्टकोच्य हिंगा परिहरिदच्या तदी होदि ॥ णाणुजनोएल विका जो इच्छदि मोबखनगगपुनगातु ।

रिवार्थ शिवार्य

र्गतं कडिद्वपिञ्छदि र्यथलयो संघयारश्मि ॥ यार्थं किरियारहियं किरियामेचं च दो वि एर्गता । भसमत्या दाएउँ जम्ममरखदुक्खमामाह ॥

विद्वेतनाचार्य नारपतिरियनरामरमयेसु हिंडेवयाण जीवाणं। जम्मजरामरणभए मोच्या किमत्यि किंचि सह ॥ कि करिय नारमी या विरिक्षी मणुक्षी सरी व संसारे । मो कोई जस्स जम्मणमरखाई न होति पायाह ॥ सेहि गहियाण य कहं होइ रई हरिखतखवाणं व । कड्यपंडियाण दर्दं बाहेहि विलुप्पमाणाणं ॥ सम्बेसि सचाणं खिखयं पि हु दुक्खमेचपहियारं । ह्या न करेई नेणु सुई लच्छी की वाए पहिषयी ॥

केल ममेत्युप्पची कहिं इमी वह पुखी वि गंतव्यं।

क्षी एतियं पि चितेइ एत्य सो को न निव्विष्णी ।।

मातवाँ भाग ( 100) मयागिष्ठोगविषविष्यक्रोगवहुदुवराजलखपदनलिव ।

नरपेन्छवायममायो मंसारे को थिई कुणह ॥ स यासवस्पि ठाणे तस्मोवाष् य परं मुखीमिखणः। एर्गनमहर्षे सुपुरिसाण वची नहिं जुनो ॥ सीत्मासमेहिं दुक्सेहि अभिदृद्विभ संसारे । पुल्हमिणं सं दुवसं दुलहा सद्धममपहिषत्ती ॥ थावायमेत्तमहुरा विवामविरसा वियोवमा विसवा।

थरुद्वमाण बहुनवा विबुद्दनणविविज्ञवा वावा ॥ एगामिस लोको कएण मोत्तव सासर्व धर्म । सेवेड श्रीवियत्थी विसमिव पार्य सहामिरश्री ॥ महिशोवि प्रणाउ घरमं घरमस्त फर्ल विधाणची ॥ मगुडको इव लोको तुच्छो इयरेण पन्नएण व । एत्य गसिअह सी वि ह इस्समायेय अनेगं ॥ एवं विहे वि लाए त्रिसपपसंगी महामोदी ॥

दुवर्खं पावस्स फलं नासधी यावस्य दुविखमी निश्वं। सी वि ह न एस्य सबसी बम्हा अयगर कर्यवबसणी छि। गहरेसणावरचवरगुषगुच्छं विषा गहीराध्यो । संसारकृषकुहराउ निग्मनी नित्य जीवाणं ॥ भागं ताण कुणंति जीडियक्ता दासन्व मन्त्रे सरा । मार्चनादिवेलिंगसीदपप्रदा बहुवि वार्षं बसे ॥

हुआ ताख कुझो वि नी परिभवी सम्मापवस्मिती। नार्य पाखितलं उचेइ विमलं सीलं न लुप्पंति ने ॥ वंभ्तं विति अहित्य सत्यवदणं झत्याववीहं विका। सीढम्मेख विखा मडप्पकरणं दाणं विचा संमर्ग॥ सन्मारेख विखा पुरंषिरमखं नहं विचा भोमखं। एवं धम्मसमुज्जमं वि विद्युदा सुद्धं विना मावणं॥

+

# दर्शनों की परस्पर तुलना

दांनी के पारस्परिक भेड़ और समानना को समानने के सिए मीचे दुष्ट पार्टे लिखों जानों हैं। दर्गनों का संदिन सक्त समानने में ये बार्ने विदोश महायह गिढ़ होगी। इनमें सभी दांने उनके विदासनम के खनुसार उनके भा है। पतने सनायां जा कुदा है कि दर्गनों के विदासनम को से सम्बन्ध के के कारणी

जनके विकासकम के ब्युमार रक्ते कर हैं। यहने सामा पर चुका है कि रहीतों के विकासकम को से धारार हैं। यहने कराया जो मान कर पत्रने वाली और मुंत्क को मुन्तना देने बाली। यहने दैदिक परस्था के ब्युमार हो। यहने का विकास किया जाया।

प्रवर्ग र

मोज्य रहीन पर बहिन चानि है बना। हुए युन हैं। वे हो इसके आहि समर्थे हामने जाने हैं। बोग रुप्ति बारि पन्तानि से इसके हुआहे । वेरिवेड रहीन है जबके हामने बनावि से स्वाचित से होने के दौना। मोहोला है दौनीन चौर बेहाल है जाए। हिन्दु बारेन बेहाल वा बाहरन सहारायार में हो ताह है

🕟 🤥 मुख्य प्रतिपाद्य बांत्य, बोग, बेरोपिक, न्याय और बेदान्त वे पाँची दर्शन प्रात्वाही हैं अर्थान् कान की प्रधानना देते हैं। मान से ही सुकि भारत है। प्रकृति और पुरुष का भेदहान हो सौक्यमत में मोड रें। इसको वे विवक रुपाति कहते हैं। योगमत भी ऐसा ही मानता है। बरोपिक खोर स्थात कहत है। बरोपिक खोर स्थात कहत है। वरोपिक खोर स्थाय १६ परामी के तत्त्वमान से मोख मानते है। मावा का व्यावरण हटने पर प्रदानस्य का साहात्कार हो जाना का आवरण हटन पर अकार इत पाँची दर्शनों में ं शान हो मोल या मोल का कारण है। इस लिए झान ही सुख्य

भीमांना दर्शन कियाबादी है। उनके मत में बंद विदित कर्म रूप से प्रतिपाच है। ही जीवन का मुख्य जेय है। वेश्विहित कर्मी के अनुदान और ा जावन का मुख्य व्यव हो वश्वाहत करने क अञ्चल व्यव ्निपिद्ध कर्मी को छोड़ने से जीव को स्था खथवा सुख प्राप्त होता हो। अब्दे वा दुरे कर्मी के कारण हो जीव सुली या दुर्जी होता है। कर्मी का विधान या तिपेव हो सीमीमा दर्शन का मुख्य प्रतिप्राग है।

#### **जग**त

सांख्य दर्शन के अनुमार जगन प्रकृति का परिणाम है। मुख्य रूप से प्रकृति और पुरुष हो तस्व हैं। पुरुष चनन, निर्तित मुख्य रूप स अञ्चल जार जुड़न राज्य चार चुन्य चनवा, तालव निर्मुख तथा प्रद्रम्य नित्य है। महति बद्द, विगुर्गामिक तथा वरिगुमिनित्य है। सस्य, रबस्, श्रार तथम् तीनी गुला की वारम्माभागत्व व १९९२ । १९५० १९५५ १९मा शुमा अ साम्यावस्था में संमार प्रकृति में लीन रहता है। शुम्में से विषमता साम्यावाया होने पर प्रकृति से महत्तस्य, महत्तन्त्र में श्रहर्शुर श्राहि हान यर वर्णा अवस्थात क्यान म अवस्थार स्थान वाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, प्राँच हन्मात्राएँ, स्थेन

. जैत पाटावली

( 110 )

उत्पत्ति होती है। पाँच तन्मात्राची से फिर पाँच महाभूत उत्पत्त होते हैं। याँच महाभूतों से फिर सम्पूर्ण जगन् को सृष्टि होती है।

योग्य दर्शन का मृष्टिकम भी सांख्य दर्शन के समान ही है। इन्होंने इंश्वर की माना है किन्तु सृष्टि में उमका कोई हलाईप

नहीं होता । वैशेषिक दर्शन के अनुसार संसार परमाशु से शुरू होता है। परमाणु से द्रपणुंक, तोन द्रपणुकों से त्रसरेणु इसी क्रम से पटारि श्चवयवी द्रव्य बनते हैं। ये श्ववयवी द्रव्य ही संसार है। द्रव्य

शुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और समाब ये सात परार्थ है। न्याय तथा मीमीसा दरान में सहिवन वैरोपिकों के समान ही है। वेदान्त दर्शन में संसार भद्य का विवर्त और माया का ' परिशाम है। संसार पारमाधिक सत् नहीं है किन्तु व्यावहारिक

सन् अर्थान् मिण्या है।

जगत्कारम प्रस्थत है। नैयायिक और बेरोपिका के अनुसार कार्य अगन के

सांच्य और योग के मन से जगन का कारल त्रिगुलारिमका

प्रति परमाणु, ईधर, ईधर का शान, ईधर की इच्छा, ईभर का प्रयत्न, दिशा, काल, चट्ट ( धर्म चीर चधर्म ), प्रागमाव चीर विध्वमसगामाय कारण है। मोमांतकों के मन में जीव, शहर श्रीर परमागु, जान के प्रति कारण हैं। वेरान्त के मन से इंघर श्रमान श्रीवशा से ग्रफ प्रात कारण व अग्र जगर का उनाहान कारण दे और रही निमित्त कारण है।

## ईश्वर

माजिय दर्गत देशर को नहीं सानता। योग दर्गन के शक्त-गत कर्मियांक और जनके फल काहि से व्यागृष्ट पुत्रन दिशोव देशर है। इनके सम में दूरत दास्त्रन्ता नहीं है। देशीयंक और परिव मत में दूषर दागन् का कर्ती है। वसमें श्वाठ गुरा रोते स्थाप (एक्स), परिमाण् (राममहन्) पुष्तस्त्र, मंदीम, विमाग, है, स्था और रामना।

मीमांतक ईश्वर को नहीं मानते। वेदान्ती मायाविष्यन्न रूप को ईश्वर मानने हैं।

#### जीव

मांख्य दर्शन में पुरुष को ही जीव माना गया है वह अनेक या विमु क्योंन् सर्व स्थापक है। मुल दुन्य स्थादि सब प्रश्ति के मैं हैं। पुरुष क्यानता के कारण अन्हें क्यना नमम कर दुन्ती होता है। योग दर्शन में और का स्थल्प मांच्यों के मचान ही है।

हेरोंकर नया वैशायमें के कानुगार शरीर, इन्ट्रिय काहि का क्षिप्रतान कात्मा है और है। इसमें १४ तुम्य है-कंप्या परिमाण, एपन्य, संबोग, विभाग, चुंद, तुम्प, हुम्य, क्ष्या, हेप्र, प्रतान, प्रदे कार्य केरी भावना नाम का संवार। इनके पन में भी और विश्व करा कार्य है। सीमीमा दुर्गन के कानुगार मो बीच तिम, नार्या, कर्प, कर्पा, भामा है।

बेराना के बतुनार बान्यतरहा से युक्त हुए हैं वर्ष है।

# बन्ध हेत्

सालव और अप दरत है जात्यार बीच समार में जरिनेंड क कारण बेचा हुआ है। बातवा में वहांन प्रश्न में मर्पना निज है। प्रश्न जुन है और गुरूष जनन। दानों क सब्या निज्ञ मेंन यह भी वहांने के वार्यों में बाद में मानक कर भीत कार्याने के सुका-स्था समार में मेंना हुआ गाना है। जहांन और गुरूप को भेड़ान सोते हो मोन हो अगा है। हमांना इन दानों का बाबिन हे आगी, भेड़ान का न होना हो समार क्या का स्थान मानने हैं। मीजीया देशियिक भी क्यान की हो स्थान का कारण मानने हैं। मीजीया करोन के कान्यार निष्यु कमें कर का स्थान मानने हैं। पीजीया क्यान के कान्यार निष्यु कमें कर का स्थान मान स्थान के कारण है। पीजीया क्यावार की स्था का कारण माना गया है।

#### धन्घ

सांत्व मत में शिविष कुल का सम्बन्ध हो बन्त है। यात दर्शन में प्रवृति चीर दुरुष के सयोग से पैश होने वाले जीवगा चादि याँच बन्नेश बन्ध है। नैवाविक चीर वैरोविक मत में इक्षीम प्रकार के हुन्न का सम्बन्ध ही बन्ध है। मीमांता दर्शन में नरकादि दुनमें का सम्बन्ध तथा बेदान्त दर्शन में श्रीशाहिक साथ जीव का क्रमेर मान मन्य है।

#### सोव

मान्य, योग, बैरोपिक कीर न्याय दरान में दुःल का ध्येम क्यान नारा हो जाना हो भोज है। मीमांमा दरान भोज नहीं मानता है। यागदि के हारा होने वाला हमा ध्यान पुत्र उन भन में भोज है। बेरान्त दरान के क्युसार जीवालम बीर परमात्मा के क्या का मानात्मकर हो जाना भोज है।

# मोद्य साधन

मींकर श्रीर योग दर्शन में प्रकृति पुरुष का विवेक तथा वैशिष्ट क्यीं नैयायिक सत से तत्त्वमान ही सीत्त का कारण है। मोलास सन में स्वर्ग रूप सोता का साधन विधिदित कर्म का विद्याल श्रीर निषिद्ध कर्मी का खात है। यदानव दर्शन से अधिशा श्रीर व्यक्ते कार्य का निवास हो जाता सोत्त है।

### श्रधिकारी

भावन सूर्य में संसार से विरास्त प्रक्रिय की योग सामें का भिकारी माना है। योग दर्शन में मोन का व्यक्तिकारी विशिष्ट पिप बाता है। ज्याद कोर वैशेषक दर्शन में दुस्तीजाराष्ट्र चर्चात दुस्त को ब्रोपने को इच्छा बाला क्यांक मोन मार्ग कारिकारी है। मीमोसा सूर्यन में कर्मच्छानक तथा बेरान्तरहोंने में मारज बहुद्ध सम्बन्ध च्यांक मोन मार्ग का बारिकारी है।

इम लोक तथा परलोक में भोगों मे विरक्ति होना, शान्त, हान्त, उपरत तथा ममाधि से युक्त होना, परान्य तथा भोज की इच्छा होना ये चार साधन पतुष्टय हैं।

वाद

संमार में दो तरह के परार्थ हैं:—(१) नित्य जो कभी उत्सन्न नहीं होते और नक्सी नष्ट होने हैं।(२) व्यक्तिय, जो उत्सन्न भी होते हैं और नष्ट भी होते रहते हैं।

हातित्व कार्यों की उत्पत्ति को अत्येक सत को अक्रियाएँ अस जिस हैं। सांस्य कीर योगसर्रात परिखासवारी हैं। इत सत

जैन पाठावली

परिगाम वार है।

के खनुसार कार्य उत्पन्न होने से पहले भी कारण रूप में निमान रहता है। इमीलिए इसे सत्कार्यवाद भी कहा बोता है। धर्मार्य संसार में कोई बस्तु नई उत्पन्न नहीं होती। पट, पट धाई कभी पस्तुण पहले में विश्वमान हैं कारण सामधी के एक्ट्र होने पर धर्मान्यक खर्मान् प्रस्ट हो जानी है। इसी धर्मिन्यकि को उत्पर्ण कहा जाता है। परिणाम का चर्च है बरहाना। धर्मा कारण में कार्य रूप से धर्मिन्यक होता है। सोमारिक सभी पराभें का कारण मुक्ति है। महान ही सहान खाई तथां के रूप में परिणन

येरोपिक, नैवाविक और गोमांगक आरम्मवारी है। रार्वे भंत में पड़ारि कार्य परमाणुओं में आरम्भ होने हैं। क्यांत में पार्वे के समान रात्रे हैं। किसी भी कार्य के प्रारम्भ होने पा पर माणुओं में किया होने हैं। रो परमाणु मित्र कर इंग्लुक बन्ना है। गीन इंग्लुकों में जमरेणु। हमों सकार उत्तरोतर बुद्धि हों। इंग्लुक्यवायी पनना है गर्नी आरम्भवार है।

होती हुई घट पट आदि रूप में अभिज्यक होती है। इमी का नाम

बेराम्मी विवर्णवार को मानते हैं। इन के मन से मंगद मानता पूर नय का वार्ष हैं। काला क्यार्गि है। नया प्रसार्थ मानता पूर नय का वार्ष हैं। क्या प्रसार्थ मानता प्रदार्थ मानता कर करनी द्वारा मिला क्योर का शांतर का वार्ष हैं। नय का वार्ष मोन नय शांतर का वार्ष का वार्ष मानता की का वार्ष मानता के का वार्ष मानता की वार्य है। मान का मानता की वार्य मानता की वा

### द्यात्मपीरगाम

षरी दर्शनों में चात्मा विनु है। वेदान्तदर्शन में चात्मा कहें और मानी मनों में नाना।

# ख्याति

कान नो तरह का है-प्रमास और अम। अम के सीन भेद है-भीरात, सिपरिय और खन्यधुमार। भिदेशतार कान को संग्रस मेरेत हैं। विपरित कान को विषयंत्र और खनिश्चित प्रमानकर कान को कान्यवुमारा कहते हैं। विपरीत कान के लिए राग्योनकों में परसर विवाद है। धोरेटे में रुसी देख कर साँव ममफ लेता हैने कान है। बार्स पर सभ होता है कि विपरीत कान लैसे होता है। विपरिवाद कान कमो मनी में कान के जबि प्रार्थ को कारस साता है। रसमों में माँच का अम होने पर प्रभ उठता है कि यहाँ साँच नहोन पर भी उनका कान कीते हुमा है इसी का चलर हैने के लिए प्रश्नीतमों ने निष्ठ मिक्ष क्यांचियों सात्रों हैं।

सांहव, पोन और भोगांमक अध्याति या विवेकाच्याति को मानत हैं। इतका कहता है कि 'वह साँद हैं इसमें हो हान मित हुन हैं। यह रसमें है और वह साँद। 'यह रससे हैं यह स् प्रत्यत्त्व हैं और 'यह साँव हैं यह सान सरखा। दोनों हान सहें हैं। सामने पड़ी हुई रसा। का हान भी मचा है और पहले देश हुए सांद का सरख भी मचा है। इत होनों हानों में भी दो दो खंश

जैन पाठावली

( 333 )

वस्ता धन्यथास्याति है।

स्यानि है।

है और दूसरे का सामान्य अंदा। इस प्रकार इन दोनों जानों का

भेर करने वाले थांश के विस्मृत होने से बाकी बचे दोनों थांशों का

ज्ञान रह जाता है और वही 'यह साँप है' इस रूप में माल्स इन के मत में मिथ्याद्यान होता ही नहीं। जितने शान है

वेदान्ती चनिर्वचनीय स्वानि भानने हैं । श्वर्यान् 'यह सांप है' इस भ्रमात्मर ज्ञान में नया मर्प उत्पन्न हो जाता है। यह सीप क्षानविक मण नहीं है। बचौकि बान्तविक होता तो उसके कारने का असर होता । बाहाराकुम्म की तरह अमत्य भी नहीं है, क्योंकि इन होनी में परसार विरोध है। इमिन्य मन चमन और सहान वन राजी में विलक्तण अनियंचनीय अर्थान् जिमके लिए बुख नहीं कृश का सकता ऐमा साँच उत्तम शेना है । यही क्विचेक्तिय

ममागु वैरोधिक बन्यव और चनुमान ही नवान । तथा योग प्रत्यस्, प्रतुमान और धागम । नैवाविष्ट्रं /

मय स्वयं मधे हैं। इमलिए 'यह साँप है' यह ज्ञान भी सबा है। कामल में दो झान हैं और उनका मेर मालूम न पड़ने से भ्रम हो आता है। भेर या विवेक का ज्ञान न होता ही विवेकाल्याति है। नैयायिक और वैशेषिक श्रन्यधाटवाति भानते हैं। उनका करना है कि 'यह माँव है' इस ज्ञान में किसी दूसरी जगह देखा हुचा मौंप ही मालूम पहता है। पहले देला हुचा साँप 'वह साँप' इस रूप में बाल्म पड़ना चाहिए किन्तु दीव के कारण 'यह सौंप' रिमा माल्म पहने लगता है। इस प्रकार पूर्यानुभूत सर्प का बारवया (दूमरे) रूप में अर्थान 'यह मॉप' की जगह 'यह सांच' मानम

पड़ता है।

मान, उपमान श्रीर राष्ट्र । मीमांमक तथा घेदान्ती प्रत्यश्च, अनुमान, असाद, स्मागम, सर्थापत्ति श्रीर सभाव ।

#### सत्ता

रीतन को होइकर सभी रशेन मांसारिक प्रवार्थों को कालिक मांसारिक प्रवार्थों को कालिक मांसारिक प्रवार्थों को कालिक मांसारिक प्रवार्थों का कालिक मांसारिक प्रवार्थों में इसका रहता मांसारिक मांसारिक कालि मांसारिक कालि या जीत और मोंसारिक कालि या सेवारिक सम्बन्ध के नाई। मांनी । वेदानल रहने में सत्ता नीत केवारिक मेंसारिक कालि या सेवारिक मांसारिक कालि या सेवारिक मांसारिक कालि या सेवारिक प्रवार्थों में सारा नीत केवारिक मांसारिक मांसारिक मांसारिक प्रवार्थों में मांसारिक मांसारिक

#### उपयोग

स्याति है।

है और दूसरे का सामान्य श्रंश ! इस महार इन दोनों हालों भेद करने वाले खंश के विश्वन होने मे वाकी वचे दोनों खंशों भे भार करने वाला है और यही 'यह मौप है' इस रूप में मारी पड़ना है!

इन के मन में जिप्यातान होना ही नहीं। जितने जीन मय कार्य सर्व हैं। इनलिए 'यह सौंद हैं। यह सान भी सर्वा है असल में दो जान हैं और उनका भेड़ साल्स न पड़ने से अन जाता है। भेद या विवेक का ज्ञान न होना ही विवेकाल्याति हैं।

नैवायिक और बैरोपिक अन्ययान्याति भागते हैं। उनि काना है कि 'यह साँव हैं' इस हान में किसी दूसरी जात्व हैंगे हुया मींव ही भावन बहना है। यहने हेवा हुआ भाव 'यह साँव हुया मींव ही भावन बहना है। यहने हेवा हुआ भाव पात साँव हम रूप में मावन बहना है। इस मकार पूर्वातुम्त सर्व का अन्यव (वृतरे) रूप में अयोग 'यह मीव' की जात 'यह सीव' माक्र पड़ता अन्ययान्याति है। वेरान्ती अनिव्यंत्तीय स्वाति मातने हैं। अयोग 'यह ही

हैं' इस प्रधारमञ्ज्ञान में नवा सर्घ उत्पन्न हो जाता है। वह साँ पास्त्रीयक मत् नहीं है। बचोंकि वास्त्रीयक होता हो उसके कार्ड का क्रमर होता। कारकारपुरमुम की तरह क्ष्मत्व भी नहीं है, क्योंकि इन नंतो में परसर विरोध है। इसलिए सत् क्षमत् की परस्ती सीतों से विलक्ष्य क्षात्रियनीय क्योंग् जिसके लिए कुछ नहीं कहा जा सकता ऐसा सींच उत्पन्न होता है। वही क्षात्रियनीय

# ममाग्र

वैरोषिक प्रत्यत्त और अनुमान दो प्रमास गानते हैं। साहय तथा योग प्रत्यत्त, अनुमान और आगम। नैयापिक प्रत्यस्, अनु मतर्रो भाग (११७)

<sup>कृत</sup>, उपमान और शष्ट्र । मीमांसक तथा बेदान्ती प्रत्यत्त, व्यतुमान, <sup>दा</sup>मान, व्यागम, श्रयोपत्ति और श्रमाव ।

#### सचा

पेरान्त को होड़कर सभी दरांत सांसारिक वहार्यों को क्रांविक मंत्र अपीए परमाय मन मानते हैं। त्यार, और पेरेपिक क्ष्या के वार्ति के स्वार्त करा परमाय मन मानते हैं। त्यार द्वारों में द्वारा करा ममाया क्ष्या के वार्ति मानते हैं तथा, वरायों में हर का वार्ति या म्याराय सामते हैं। मानते । वेरान्त दर्शन में ममा गीन म्याय सामकर को नहीं मानते । वेरान्त दर्शन में ममा गीन म्याय सामकर के साम सामा हरते हैं। व्यवहार में काल पर वह साचि परायों में व्यवहार साचा हर के साम का साम हरते हैं। व्यवहार में काल पर वह साचि परायों में व्यवहार साचा हर के साम बता कर साचा परायों में के साम सामाय साम सामाय साम के सामय अवस्था में में का परायों में दिखासार सामा क्यांग में जिनामी हैर तक मालत पड़ने हैं उननी हैर हो नहीं हैं। हो है।

# उपयोग

प्रापेक रहाँन या उनका मन्य पाराक होने से पाने करानी बचनोर्तिया सातार है। साधारण कर से साती कांत नाया दन वर लिखे रात कराती का पर्योगा पुरावार्ति कींत दूरानी सुद्धारा है। हिन्दु गान का रक्तर पानी राती में एक साहि । का निवे प्रयोग की भोरतान कराना है। साहि साहित कराँन हुने ली दुख्य को भोरतान कराना है। करान उन्होंना कराँन होता का प्रयोग है किन की प्राप्तात । केंद्रीत कींत कांत्री होता का प्रयोग है किन की प्राप्तात । केंद्रीत कींत कांत्री कराना सामक केंद्रीत कींत्री कांत्री करान की साहित कराना सामक करान करान केंद्रीत के किना की साहित करान की हात करान करान करान करान के साहित करान की साहित करान ही होता की करान करान करान है करान की साहितक करान ही

## ईश्वर

भार्योक न चात्मा और न ईश्वर को स्थोकार करना है। जैन और बीद चात्मा से चतिरेक ईश्वर को नारे मानने। जैन और बीद सूर्वन में पूर्ण विकासन चात्मा हो ईश्वर या परमात्मा माना गया है, किन्तु यह जगतकर्षा नहीं है।

#### जीव

पार्वाक ओव को देहरूप, इन्द्रिय रूप या मनरूप मानते हैं। बौदों के मत में ओव खनेक, खण्डिक खोर मञ्चम परिमाण माले हैं। जैन दर्शन में जीव खनेक, कसो, भोक्ता और देह परिमाण हैं।

## बन्ध हेत

भावाँक मत में मोश नहीं हैं, इसलिए बन्ध हेंगु, बन्ध, मोश बसके सापन चीर व्यक्तिराध घा मत हो नहीं होता। मौढ असिसतामिनवेश अर्थोन चाहहार को बन्ध का कारण मानते हैं। जैन सत में राग चीर हेंग बन्ध के कारण हैं

#### बन्ध

यौद्ध मतमें चात्मसन्तानवरम्बरा का बना रहना ही बन्ध है। वसके टूटने ही मोच हो जाता है। जैन दर्शन में कमें परमागुर्खी का चात्मा के साथ सम्बन्ध होना बन्ध माना गया है।

#### मोत्र

, बौद्ध मत में सन्तानपरम्परा का विच्छेद हो मोच है। जैन हर्रान में कर्मी हा सर्वेषा चय हो जाना मोच है।

#### ਸਾਬਜ

धैद स्त्रांत में ममार को दु:खमय, चिवाक, मून्य व्यादि गिता गाव है। इस प्रकार का चिन्द्रत हो मोज का सोधन है। गिता गाव है। इस प्रकार का चिन्द्रत हो मोज का सोधन है। ग्लिने से ही शान्ति भाग होतो है। जैन दर्शन में चंत्रर और बेत को मोज का मध्यम साता है।

#### श्रधिकारी

मौद्ध और जैन दोनां दर्शनों में संसार से विरक्त मतुन्य वेस्त्रज्ञान का अधिकारी माना गया है।

#### वाद

सार्वाओं से बर्गु नी ज्यानि के विषय में कई बाद मस्तित है उनसे मुळा कर से स्थापकार है। कार्या बानु को ज्यानि कीर विनास स्थापकार कर से कार्यो कार तो शहरी है। स्थापन-बाद के शिक्स पत्र से कार्यायमकार, कार्युकार, कार्युकार, हक्त ज्यारकार, कार्युकार्योशास्त्रास, सन्त्यासार कार्यि की स्वर्धात है।

बीड मनीव्यसमुन्यार को मानवे हैं। कार्यन कार्यन ने कन्यति में वामे रहता है कौर न बाद में। बस्तु का क्यूनर राज्य हो जन्मर है।

े अब रहीन बारमणार्थेबार को मामना है। बादीन प्रपत्ति से वर्तने बार्य कारण रूप से सन् भीर बार्य रूप से बारन् रहना है।

# स्पादाद

वि तैन वर्गन को गांग माना जाय तो गांगा गांधी बागम है। वीर बागमा जुन के निया जाय ता सार्गर दियों का का नहीं रह जाना। उसी कहार तीर भारत का बानम कर दिया जाय ते। तैन कीन, तीन है। में रह जाय बागमा पिना जांग की भारित बारायींगी हो जाय। बारू का गण्या स्क्रम कर्ष्ट को के दिता काराया हो तह कामा है। इसका नार्गा निर्देशित कोई साथ को कामा है। तीन कामा दिवा है कि तैनेतर को जांग जाय 'समीपायार' में बाम बानों ने देता ता स्वाहार का मानाम विवास, समीप यो सरावाया स्वोहार नहीं हिया। वृत्त सामान विवास समीप यो सरावाया स्वोहार नहीं हिया है।

के लगः उमे विभाग हीट्यों में देवना उसके खन्ता समा पहाँची में दिवार स्वता समा पहाँची में देवना उसके खन्ता समा पहाँची में दिवार स्वता समा पहाँची में दिवार स्वतान्याइत को से उमें में को मानव्याइत को से स्वार्य के स्वतान्य हैं । इस जिस हिमों भी बात्र के देवने हैं, उस में खात्र मा में हैं। इस मानव्याइत को हैं। उस में स्वतान्य के देवने हैं, उस में खात्र मा है। उस मानव्याइत से ही जाती जाती है। उन मय पभी का स्विक्त स्विक्त सात अहाती है। उन मय पभी का स्विक्त है । वे सहार यह हैं— (१) स्वार्याहत स्वार्य स्वक्त (१) स्वार्याहत स्वार्य स्वक्त स्वार्य स्वक्त स्वार्य स्वार्य स्वत्र स्वार्य स्वार्य स्वत्र स्वार्य स

अन्द्रा, संय उपयुक्त पाका को मी घरा दिनिय-पामरल ऐसा से बहा दें चीर हीरासाल से जोटा है। जो डड़ भी किया में क्योंकी हम महत्व से लीर उन्हों दिन हमा क्या यह हुआ कि रामरल में रमेश की करीजा बहारन कीर होगलाल की पेयों होरासन वाका असा दें। यह बारा लोड में अमिद्र है, सक्य है, बहुत उन्हास में के स्कर में क्योंकर में पहिन्द की स्वार है।

भारतक भोज सबसे हैं कि बहायन और होतायन परस्तर क्षित्रक से माद्रस होते हुए भी किनती सरकता से एक जात हाते हैं। यहां हात क्या हाजों भमी का भी है। महले पत्त के पित्रक अंबते हैं। यर गहरा विचार करने से गर्व व्यंत्रत को प्यान में रहते से व्यंत्रक्क हो जाते हैं। वहाँ यह कहा जा सहजा है, कि हुद्रान कोर पहणान जो कार्योदिक पत्त है, सांत्रत कार्रित नहीं। के दूर कार्स की रह मान्त्रे हैं। यह कहता ठीक नहीं है। व्यंतिक वर्त माने कार्योद्ध होते हैं। यह कहता ठीक नहीं है। व्यंतिक

जैन पाठावलो

- (१) स्पाद्स्ति घट: (घड़ा है)—तो इसका अर्थ यह है कि घट अपने स्वरूप की अपेशा से है-घट विषयक अस्तित्व घट में पाया जाता है। यदि वस में घट संबंधी अस्तित्व न माना बाय तो घड़ा गये के साना की नाहे नागीज (अभावरूप) ठहरेगा, क्यांकि उस में अस्तित्व नहीं है।
- (२) स्पादास्ति घटः (घड़ा नहीं है) इसका वर्ष यह है कि घट में, घट के व्यतिरिक्त करन्य पटादि पदार्थों का बाहित्व नहीं है। क्यांत् एट कादि पदार्थों में जो ब्यतित्व पाया जाता है यह व्यतित्व धर्म नहीं है। यदि पट कादि के ब्यतित्व का निर्फेप घट में न किया जाय तो घड़ा, पट भी हो जायगा। इसी प्रकार किसी भी एक वस्तु में, व्यन्य समाम चस्तुकों की सत्ता मान केंगे से किसी का भी घवरूप चिरा न हो सहेगा—'सर्थ सर्वा-क्षेत्रके जात्य" हो जावगा। कतः हरएक बस्तु में, वसके व्यतिरिक्त करारी बस्तुकों की बमाना मानगी पदना है।
- ( ३ ) स्वादितिनास्ति पटा-(पड़ा है और नहीं मी) हमरा: दोनों रूपों की अपेका रस कर वस्तु का विधान किया जाय तो वस्ते और दूसरे वास्य का जो निष्कर्य निकलता है, वही
- जाय ता परण कर कि हो में किय में होनों की करिया है। इस में क्या में होनों की करिया हो गई। हो हो ही ही ही ही ही ही है। इस में क्या में होनों ही करिया जा महत्त है। इस मद का भागा द्वारा एक साथ क्या नहीं हिया जा महता है, इस करिया से बात का पूर्ण स्वरूप करा नहीं हिया जा महता है, इस करिया से बात हो हो है। हिया हा मार करिया जा महता है की है कि होए मार मार करिया नहीं करिया नहीं है की है है हो हो हो मार मार करिया नहीं करिया नहीं है की है की है की है करिया मार करिया नहीं है की है की है करिया नाय है।

संसर होता है। वह एक ही गुरा का कथन कर सकता है। येना

( e=u )

सातवाँ भाग

होई राज्य ही नहीं है जिससे पृथक् पृथक् सब घर्मी का कथन हिया जा सकता हो, व्यतएव इस दृष्टि से वस्तु को व्यवक्रय राज्य से कह देना हो उपयुक्त होता है।

पर जैसे अवक्तज्य न मानना भूल है, उमी प्रकार एकदम (सर्वया) अवक्तव्य मान लेना भी भूत ही है। क्योंकि यदापि वस्तु अवक्तव्य है, फिर भी वह 'अवक्तव्य' शब्द से तो कही ही जाती है। अवक्तव्य शब्द के द्वारा बक्तव्य होने के कारण वस्तु को क्यींचत् अवत्तव्य कथांचत् वक्तव्य कहना चाहिए। वस्तु को अवक्तव्य भी मानें और अवक्तव्य शब्द से उसे कहते भी जाए तो "मैं मौनी हूँ" इस कथन की तरह स्वयचन से ही बाधा आवेगी।

इस प्रकार एक हो यस्तु में चरितत्व, नास्तित्व, चरितत्वना-स्तित्व और श्रवकतब्यत्व रहना सिद्ध होता है। आगे के तीन भंग भी विकता भेद से मगभ लेना चाहिए । विस्तार भय से उनका स्पृष्टी करण नहीं किया जाता । इस प्रकार सप्तमंगी न्याय स्पृष्ट हो जाता हैं।

उत्पर से यह मिद्धांत बड़ा ही विचित्र प्रतीत होता है, परन्त बास्तविक सत्य इसी में हैं। हाँ इस में प्रयुक्त होने वाले ब्रस्तित्व नास्तित्व आदि के अर्थी का प्यान रखना चाहिए। सप्रमिद्ध दार्श-निक प्लेटो ने क्श है-

When we speak of not being we speak. I suppose not of some thing apposed to belng but only different.

धर्यान् " जब हम बसत्ता (नास्तित्व) के सम्बन्ध में इस इरते हैं, हो मेरा ज्याल है कि हम सत्ता के विरुद्ध नहीं कहते-सिर्फ अन्य के श्रर्थ में कहते हैं। " इससे म्पष्ट हो जाता है कि श्रस्तित्य श्रीर नास्तित्व परस्पर मर्वधा विरोधो धर्म नहीं हैं।

एक उदाहरण सीडित-एक पाठराला में दो विशामी पदते हैं। उन में से एक ने दूसरे की किताय उठा लो। पदने-पदते पता उत्तटा एका पट गया। वह लड़का. डिमसी वह किताय मो, क्या उने नहीं सेता। क्यों एक पता पटने में क्या यह दिनात नहीं रही। वेशक, किताब तो वहीं दें, पर उमसी वह हालत नहीं रही। क्यांत किताब की पहली हालन ( पर्योग) नष्ट हो। पर्य ब्रीट एक नयी हालत उत्पास हो गई. किन्तु किताब का क्षित्व बना रहा है। हमी बात की स्याडार कहता है कि-किताब क्येंचित तित्य हैं और क्येंचित कीताब है, नित्यत्व ब्रीट क्येन्टिव की तरह एकत, क्रेंकरत, सच्य कमन्तर बादि क्यान्टा पर्म एक ही बस्तु में मित्रमाव से रहते हैं।

यान सीजिए हिमी जगह तीन धारमी हैं। एह मोने का पह चाहता है। दूसरा माने का सुग्रुट चाहता है और तीमरा सीना चाहता है। तीनों वर्णिक ध्योन-ध्यने हुए की तीन में निरुत्ते। भाग्य से वहीं पड़ा मान्द्रम हुंधा। मगर वहीं तठ पहुँचने से पहले। भाग्य में वहीं पड़ा मान्द्रम हुंधा। मगर वहीं तठ पहुँचने से पहले। पड़ा चीड़-चीड़ वह सुग्रुट चना दिया गया। ध्या जो पड़ा पाहता था जमे दुःख होता है। जो सुरुट पाहता था जमे प्रमुक्ता होती है और जो मोना चाहना था जमे न हमें होता है न दिचार हो बह कप्त्रमा सहता है। इम जगारहा से हम समस्त पड़िते हैं कि पहले से पुरुत्ती को हिन्दे में यह और मुक्त दूष्टर पूष्ट पूष्ट पूष्ट दूर्पी हैं और तीनरे थी हिन्दे में होता एक। ध्यांन्य गुपरों में ब्रुत्तीन्य दहन्य बनोहस्त है। होनी हो पर्यावदर्शन और इन्टाईट इते हैं। बंग, स्वाहार इम प्रकार परस्वर विरोधी प्रतीत होने वाले न्तु बालब में श्रीवरोधी, धर्मी का एकत्र मगन्यय करता है और स्वीहर इस गया है कि जो चिरोध का मधन करे वही स्वाहार — विरोधमधन हि स्वाहार: ! "

स्रिकेष परिदार-स्थाहाद के बास्तविक स्वरूप की भान-भिक्रता एवं साम्यदायिक विदेष के कारण स्थाहाद जैसे सार्थिक्दान्त पर भी भाषेप किये गये हैं। अब हम मंजेप में उनका दिन्दर्शन कारों।

इमहा ममाणत यह है कि क्रतेहाल न हो सर्वेया क्रवे-काल रुद है न सर्वेया फ्टान्त रुद हो। ब्रांक मर्देवन क्रतेहाल रूद बीर क्रवेनिय रहान्त रुद है। क्रांकाल हो प्रहाद हाई है (१) सम्बानेकाल और (१) मिच्या क्षेत्रहाल हो हो। क्रांक क्ष्माल से सम्बारकाल और मिच्या फ्टान्त के मेह से हो क्षांका हाई है। को प्रस्व क्युमान क्यारि प्रमायों से व्यक्तिक क्ष्मक क्षांका क्षांका क्यार्व माण्यांकाल है। त्यां को प्रस्व क्यांका मार्विय समायों से व्यक्तिक क्ष्मक त्यां को प्रस्व स्थाने मंत्रियाहत है।

